...کرشن

...کے لوگوں کو بھی بسپا کیا - اور کئی فتوں...
...ح حاصل کی - سمندر میں داخل ہو کر ...
...س کے دوسرے دیوتا ساتھیوں کو پچھاڑا -
...کی شجاعت کا یہیں تک اختتام نہ ہوا -
...پاتال تک میں جا کر وہاں کے پنچ جن کو شکست
...اور ... پنچ جنیہ کا مشہور عالم دیوی
... ارجن کے ساتھ مل
...پانڈوؤں نے جنگل میں اگنی کو انہوں نے پرسن کیا -
...ان سے اسے چکر کا انعام حاصل ہوا - ... پر
...کر انہوں نے اندر کی راجدھانی امراوتی
...وا ڈال دیا - اور وہ وہاں سے پاری جات
...کشن اپنے ساتھ لائے -

جب یدھشٹر نے راجسو یگیہ کا فیصلہ کیا - تو
...نے سمجھا دیا - کہ پہلے مگدھ کے راجہ
...سندھ کا قصہ پاک کرو - نتیجہ یہ ہوا کہ
...سندھ پرپورش کی گئی - اور اسی اثنا میں اس
...قصہ ختم ہوا - اور ساتھ ہی ... کا بھی
...ہوا - یدھشٹر اور کوروؤں کے درمیان
...جوئے کی بازی کھیلی گئی - تو اس وقت بھی کرشن
...مقام پر بیٹھ کر دیکھ رہے تھے - اور جب
...کا ہار کھا گئی - اور دروپدی کھلے دربار میں
...کرنے کی تو کرشن ہی کا حصہ تھا -
...کی شان کو برقرار رکھنے کے لئے ... بڑھا
...نہ آنے دی -

...پانڈوؤں کے بن باس کے خاتمہ پر کرشن
...کا ہی تھے - پھر ارجن اور دریودھن ان کے
...کے - ... کے بدھ کے لئے کرشن
...دی - ارجن نے کرشن کی ذات کو اپنا
...چنا - اور دریودھن نے کرشن کی سینا کو
...منظور کیا - کورو کھیشتر کے میدان میں کرشن
...کی حیثیت میں ارجن کے رتھ پر بیٹھا -
...نے جب دونوں اطراف کی سیناؤں کو
...اور دشمن کی سینا میں اپنے ہی رشتہ دار
...اور بزرگ دیکھے ...
...کسی جینے کے ... کا قصد کیا
... - تو اسی عجیب کیفیت سے بچا کر
...کے لئے کرشن نے اسے گیتا کا اپدیش
... اس گیتا کے گیان کو اب تک تمام دنیا
...کھوں پر ... ہے - اور ... حالک
...انسانی سماج اپنی - جو گیتا کی
...فیضیاب ہو رہا ہے - بلکہ ...
...ورسن اور انگلینڈ کے کارلائل نے بھی ایک
...سینہ بہ سینہ ملاقات کے دوران گیتا کو
...تسلیم کیا ...

...کا ... کرتا ہے !

برسات

برسات آ گئی - موسم گرما کے جلنے سورج
سے - گرم لو اور جلتی زمین سے - جب ہم چین چاردیواری
کے اندر بند پڑے تھے - وہ خوش ہیں - کہ ہوائیں
نمی آ رہی ہے - جو آسمان کی طرف بے تاب نگاہوں
سے پانی کی بوندوں کی تلاش کرتے تھے - وہ بار بار
دوگلی میں پانی کے نالوں کو بہتا دیکھ کر پھولے نہیں سماتے -
دیکھ میں ہوں کہ ابھی تک فرقت کی آگ تیز ہیں
لے رہا ہوں -

جب لوگ گرمی سے ڈر کر مکانوں کے اندر
... تھے - میں اس وقت بھی دریا کے کنارے
... ایک سنسان جنگل میں آوارہ تھی -
... میرے کانوں آ رہی تھی - لیکن جس
... تھی - ... کی دنیا میں گم تھا -
... تلاش کی - لیکن
...
... کر ...
... کھلی تھی -
...
... ہے - لوگ اسی کی
... جشن منا رہے ہیں - جو ہم اپنے گرم ہری

اور قابل نفرت معلوم ہوتی تھی - اب خوش نما ...
اور سرد ہو رہی ہے -

سورج کی دھوپ - آسمان کی بارش اور دریا
کا پانی سب ہی سہانے معلوم ہوتے ہیں - راتیں
ٹھنڈی اور میٹھی ہو رہی ہیں - زمین کے ذرے ...
میٹھے ہو رہے ہیں - فصل پر فصل بوئی جا رہی
ہے - غرضیکہ پرندے میٹھی بولیاں بولتے ہیں
صبح سے شام تک مٹھاس کی لہر چل رہی ہے - اور
ہر ایک دل کے اندر ایک قسم کا جوش موجیں مار رہا
ہے - مگر ایک میں ہوں - کہ میرے لئے کوئی چیز بھی
دلکش نہیں -

کہتے ہیں - کہ بھگوان نے اپنی دلوں میں جنم
پایا تھا - وہ بھی موسم ہے - یہی دن ہے - اور ...
تھی - چاروں طرف اسی کے استقبال کی خوشیاں
منائی جاتی تھیں - آج پھر وہی جنم اشٹمی ہے -
لوگ اسی کی آمد میں پھولے نہیں سماتے - خوشی ...
مندروں میں جاتے - اور بھگوان کے درشن کرتے ...

مگر

میں اسی وقت بھی ادبی صورت بنائے بیٹھی
ہوں - قدرت کی دلفریبیاں میری تفریح کا سامان ...

265
(16)

ॐश्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ षोडशाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहां पूर्वलेअध्यायविषे (अधश्चमूलान्यनुसंततानिकर्मानुबंधीनिमनुष्यलोके) इसवचनकरकै श्रीभगवान्नैं मनुष्यदेहविषे पूर्वलेपुण्यपापकर्मोंकेअनुसार अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुईशुभवासनावोंकूं संसारवृक्षकाअवांतरमूलरूपकरिकै कथनकर्‍याथा ॥ तेवासनाहीं पूर्वनवमेअध्यायविषे प्राणीयोंकीप्रकृतिरूपकरिकै दैवी आसुरी राक्षसी यहतीनप्रकारकीयां सूचन करीयांथ्यां ॥ तहां वेदनैं बोधनकर्‍येजे नित्यनैमित्तिककर्महैं तथा आत्मज्ञानकेशमदमादिकउपायहैं ॥ तिनदोनोंकेअनुष्ठानकरणेविषे प्रवृत्तिकरावणेहारी जा सात्त्विकीशुभवासनाहै ॥ सासात्त्विकीशुभवासना दैवीप्रकृति कहीजावैहै ॥ और वेदउक्तनिषेधका उल्लंघनकरिकै स्वभावतैंसिद्धरागद्वेषकेअनुसारी तथासर्वअनर्थोंका कारणरूप जा प्रवृत्तिहै ॥ ताप्रवृत्तिकाहेतुभूत जा राजसीतामसीरूप अशुभवासनाहै ॥ साअशुभवासना आसुरीप्रकृति तथाराक्षसीप्रकृति कहीजावैहै ॥ तहां विषयभोगोंकीप्रधानताकरीकै रागकीप्रबलतातैं ताअशुभवासनाविषे आसुरीप्रकृतिपणाहै ॥ और हिंसाकीप्रधानताकरिकै द्वेषकीप्रबलतातैं ताअशुभवासनाविषे राक्षसीप्रकृतिपणाहै ॥ इतनादोनोंका अवांतरभेदहै इति ॥ अब इसअध्यायविषे यहवार्त्ताकहेहैं ॥ शास्त्रकेअनुसारिपणेकरिकै तिसशास्त्रविहितअर्थविषे प्रवृत्तिकरावणेहारी जा सात्त्विकीशुभवासनाहै ॥ सासात्त्विकीशुभवासनातौं दैवीसंपद कहीजावैहै ॥ और शास्त्रकाउल्लंघनकरिकै तिसशास्त्रनिषिद्ध विषयोंविषे प्रवृत्तिकरावणेहारी जा राजसी तामसीरूप अशुभवासनाहै ॥ साअशुभवासना राक्षसी आसुरी इनदोनोंकीएकताकरिकैआसुरीसंपद कहीजावैहै ॥ इसरीतिसैं शुभरूपताकरिकै तथाअशुभरूपकरिकै दोप्रकारकाहीं वासनावोंकाभेदहै ॥ यहहींदोप्रकारकाभेद (द्वयाहप्राजापत्यादेवाश्चासुराश्च) इत्यादिकश्रुतियोंविषे कथनकर्‍याहै ॥ तहांदैवीसंपदरूपशुभवासनातौं इसअधिकारीपुरुषके मोक्षकाहेतुहै ॥ और आसुरीसंपदरूपअशुभवासना इसपुरुषके बंधकाहेतुहै ॥ यातैं दैवीसंपदरूपशुभवासनातौं इसअधिकारीपुरुषनैं अवश्यकरिकै ग्रहणकरणेयोग्यहैं ॥ और आसुरीसंपदरूपअशुभवासना अवश्यकरिकै परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ सो शुभवासनावोंकाग्रहण तथाअशुभवासनावोंकापरित्याग तिनशुभवासनावोंकेस्वरूपजानेंतैंविनाहोवैनहीं ॥ यातैं श्रीभगवान्नैं तिनशुभवासनावोंकेग्रहणकरावणेवासतै तथा तिनअशुभवासनावोंकेपरित्यागकरावणेवासतै तिनशुभवासनावोंकेस्वरूपकूंकथनकरणेहारायहषोडशाअध्याय प्रारंभकरीताहै ॥ तहां प्रथम तीनश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् ग्रहणकरणेयोग्यदैवीसंपदकेस्वरूपकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ अभयंसत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ॥ दानंदमश्चयज्ञश्चस्वाध्यायस्तपआर्जवम् ॥ १ ॥

अभयम् । सत्त्वसंशुद्धिः । ज्ञानयोगव्यवस्थितिः । दानम् । दमः । च । यज्ञः । च । स्वाध्यायः । तपः । आर्जवम् ॥ १ ॥

॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन अभय अंतःकरणकीशुद्धि ज्ञानयोगदोनोंविषेस्थिति दान तथा दम तथा यज्ञ स्वाध्याय तप आर्जव यहसर्वदैवीसंपदरूपहै ॥ १ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन शास्त्रनैं उपदेशकऱ्याजोअर्थहै ॥ ताअर्थविषे संशयतैंरहितहोइकै जो तिसअर्थकेअनुष्ठानकरणेविषे तत्परताहै ताकानाम अभयहै ॥ अथवा सर्वपरिग्रहतैंरहित एकाकीस्थितहुआमैं कैसेजीवौंगा इसप्रकारकेभयतैं जोरहितपणाहै ताकानाम अभयहै ॥ और अंतःकरणकी जा सम्यक्निर्मलताहै ताकानाम सत्वसंशुद्धिहै ॥ तहां ताअंतःकरणकीशुद्धिविषे जा परमेश्वरकेस्वरूपजानणेकीयोग्यताहै यहहीं ताअंतःकरणकीशुद्धिविषे सम्यक्पणाहै ॥ अथवा परवंचन माया अनृत इत्यादिकोंकाजोपरित्यागहै ताकानाम सत्वसंशुद्धिहै ॥ तहां आपणे अर्थकीसिद्धिकरणेवासतै जिसीकिसीमिसकरिकै जो परका वशकरणाहै ताकानाम परवंचनहै ॥ और हृदयविषे अन्यप्रकारकाअभिप्रायराखिकै बाह्यतैं अन्यप्रकारकाव्यवहारकरणा याकानाम मायाहै ॥ और जैसा वृत्तांतदेख्याहोवै तैसावृत्तांत मुखतैंनहींकथनकरणा किंतु तिसतैंअन्यथाहींकथनकरणा याकानाम अनृतहै ॥ इत्यादिकोंतैंजोरहितपणाहै ताकानाम सत्वसंशुद्धिहै ॥ और अध्यात्मशास्त्रतैं जोआत्माकेस्वरूपकानिश्चयहै ताकानाम ज्ञानहै ॥और चित्तकीएकाग्रताकरिकै तिसस्वरूपका जोआपणेअनुभवविषे आरूढपणा है ताकानाम योगहै ॥ तिसज्ञानयोग दोनोंविषे जा व्यवस्थितिहै अर्थात् सर्वकालविषे तत्परताहै ताकानाम ज्ञानयोगव्यवस्थितिहै ॥ अथवा (अभयंसत्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः) इसवचनका यहदूसरा अर्थकरणा ॥ (अभयंसर्वभूतेभ्योमत्तःस्वाहा) ॥ अर्थयह ॥ हमारेतैं सर्वभूतप्राणीयोंकेतांई अभयप्राप्तहोवै ॥ इसप्रकारका अभयदानदेणेकासंकल्प संन्यासकेग्रहणकालविषेहोवैहै ॥ तासंकल्पकाजो परिपालनहै अर्थात् शरीरमनवाणीकरिकै जो किसीभीप्राणीकूं भयकीप्राप्ति नहींकरणीहै ताकानाम अभयहै ॥ यहअभयरूपधर्म दूसरेभी परमहंसकेसर्वधर्मोंका उपलक्षणहै ॥ और श्रवण मनननिदिध्यासन इनतीनोंकीपरिपक्वताकरिकै अंतःकरणका असंभावनाविपरीतभावनादिकमलोंतैं जो रहितपणाहै ताकानाम सत्वसंशुद्धिहै ॥ और अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारका जेआत्मसाक्षात्कारहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ और मनोनाश वासनाक्षय इनदोनोंकेअनुकूल जो पुरुषप्रयत्नहै ताकानाम योगहै ॥ तिसज्ञानयोगदोनोंकरिकै जासंसारिजिनोंतैंविलक्षण जीवन्मुक्तिरूपअवस्थितिहै ताकानाम ज्ञानयोगव्यवस्थितिहै ॥ इसप्रकारकेव्याख्यानकीयेहुए यहअभयादिकदैवीसंपद फलरूपहींजानणी ॥ तहां भगवद्भक्तितैंविना साअंतःकरणकीशुद्धि होतीनहीं यातैं ताअंतःकरणकीशुद्धिकेकथनकरिकै साभगवद्भक्तिभी कथनहुईजानणी ॥ काहेतैं (महात्मानस्तुमांपार्थदैवींप्रकृतिमाश्रिताः ॥ भजंत्यनन्यमनसोज्ञात्वाभूतादिमव्ययम्) इस नवमेअध्यायकेश्लोकविषे दैवीसंपदविषे भगवद्भक्तिकाभी कथनकऱ्याथा ॥ और साभगवद्भक्ति अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ यातैं श्रीभ

गवान्नें ईहां अभयादिकोंकेसाथि तिसभगवद्भक्तिका पठनकऱ्यानहीं इति ॥ इसप्रकार महान्‌भाग्यवालेपरमहंससंन्यासीयोंके फलभूतदैवीसंपदकूंकथनकरिकै श्रीभगवान् अब तिनसंन्यासीयोंतैंअन्य गृहस्थादिकोंके साधनभूतदैवीसंपदकूं कथनकरेहैं (दानंदमश्चइति) तहांआपणेममत्वअभिमानकेविषय जेअन्न सुवर्ण गौ भूमि गृह इत्यादिकपदार्थहैं ॥ तिनअन्नादिकपदार्थोंका यथाशक्तिपरिमाण तथाश्रद्धाभक्तिपूर्वक जो अतिथिब्राह्मणादिकोंकेतांई देणाहै ताकानाम दानहै ॥ और श्रोत्रादिकबाह्यइंद्रियोंका जो स्वस्वविषयतैंनिवृत्तिरूपसंयमहै ताकानाम दमहै ॥ यद्यपि गृहस्थपुरुषोंविषे सर्वप्रकारतैं इंद्रियोंकासंयम संभवता नहीं ॥ तथापि ऋतुकालादिकोंतैं अतिरिक्तकालविषे जो मैथुनादिकोंकानहींकरणाहै यहहीं तिनगृहस्थोंके इंद्रियोंकासंयमहै ॥ ईहां (दमश्च) इसवचन विषेस्थित जो चकारहै सोचकार ईहांनहींकथनकरेहुए दूसरेभीनिवृत्तिरूपधर्मोंके समुच्चयकरावणेवासतैहैं ॥ और शास्त्रविहितकर्मविशेषकानाम यज्ञहै सोयज्ञ दोप्रकारकाहोवैहै ।। एकतौं श्रौतयज्ञहोवैहै ॥ और दूसरा स्मार्त्तयज्ञहोवैहै ।। तहां अग्निहोत्र दर्शपूर्णमास सोमयाग इत्यादिक श्रौतयज्ञकहेजावैहैं ॥ और देवयज्ञ पितृयज्ञ भूतयज्ञ मनुष्ययज्ञ यहच्यारों स्मार्त्तयज्ञ कहेजावैहैं ॥ यद्यपि ब्रह्मयज्ञभी स्मार्त्तयज्ञहीं कह्याजावैहै । तथापि ईहां तिसब्रह्मयज्ञकास्वाध्यायपद करिकै पृथक्‌हीं कथनकऱ्याहै ॥ यातैं ईहां यज्ञशब्दकरिकै च्यारिहींस्मार्त्तयज्ञ ग्रहणकऱ्येहैं ॥ ईहां (यज्ञश्च) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै ॥ सोच कार ईहां नहींकथनकऱ्येहुए दूसरेभी प्रवृत्तिरूपधर्मोंके समुच्चयकरावणेवासतैहै ॥ यह दान दम यज्ञ तीनों गृहस्थपुरुषकेहीं दैवीसंपदरूपहै ॥ और पुण्यविशेषकी उत्पत्तिवासतै जो ऋगादिकवेदोंकाअध्ययनहै ताकानाम स्वाध्यायहै ॥इसस्वाध्यायकूंहीं ब्रह्मयज्ञ कहेहैं ॥ यद्यपि पूर्वउक्तयज्ञशब्दकरिकै पंचप्रकारके स्मार्त्तयज्ञोंका कथन संभवहोइसकैहै ॥ तथापि तिसस्वाध्यायविषे ब्रह्मचारीकाअसाधारणधर्मपणा कथनकरणेवासतै श्रीभगवान्नें ईहां स्वाध्यायका पृथक्‌कथनकऱ्याहै ॥ और आगेसप्तदशअध्यायविषे कथनकऱ्याजो शारीर वाचिक मानसिक यहतीनप्रकारकातपहै ॥ सोतीनप्रकारकातपहीं ईहां तपशब्दकरिकैग्रहणकरणा ॥ सोतप वानप्रस्थका असाधारणधर्महै ॥ इसप्रकारसंन्यास गृहस्थ ब्रह्मचर्य वानप्रस्थ इनच्यारिआश्रमोंके असाधारणधर्मोंकूंकथनकरिकै अब ब्राह्मण क्षत्रियवैश्य शूद्र इनच्यारिवर्णोंके असाधारणधर्मोंका कथनकरेहैं (आर्जवंइति) तहां वक्रभावका जोपरित्यागहै ताकानाम आर्जवहै ॥ अर्थात् श्रद्धावान्‌श्रोतावोंकेसमीप निश्चय कऱ्येहुएअर्थका जो नहींगुह्यरखणाहै ताकानामआर्जवहै इति ॥ १ ॥ ❀ किंच ॥

(मू० श्लो०) अहिंसासत्यमक्रोधस्त्यागःशांतिरपैशुनम् ॥ दयाभूतेष्वलोलुप्त्वंमार्दवंह्रीरचापलम् ॥ २ ॥ अहिंसा । सत्यं । अक्रोधः । त्यागः । शांतिः । अपैशुनं । दया । भूतेषु । अलोलुप्त्वं । मार्दवं । ह्रीः । अचापलम् ॥ २ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन

अहिंसा सत्य अक्रोध त्याग शांति अपैशुन सर्वभूतोविषे दया अलोलुप्त्व मार्दव न्ही अचापल यहसर्व दैवीसंपद रूपहैं ॥ २ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन प्राणीयोंके जीवकारूपवृत्तिकाजोछेदनहै ताकानाम हिंसाहै ताहिंसातैंजोरहितपणाहै ताकानाम अहिंसाहै ॥ अर्थात्‌जिसजिसप्राणीका जिसजिसवृत्तितैं जीवनहोताहोवै ॥ तिसतिस प्राणिके तिसतिसवृत्तिका कदाचित्‌भी छेदननहींकरणा याकानाम अहिंसाहै ॥ और अनर्थकाअजनक ऐसाजो यथार्थअर्थका बोधकवचनहै तिसवचनका सर्वदा उच्चारणकरणा याकानाम सत्यहै ॥ तहां जिसयथार्थअर्थकेबोधकवचनकेउच्चारणतैं ब्राह्मणादिकोंकीहिंसाहो तीहोवै तिसविषे सत्यताकेनिवृत्तकरणेवासतै अनर्थकाअजनक यहविशेषणकथनकऱ्याहै ॥ और अन्यप्राणियोंनैं वाणीकरिकैनिरादरकीयेहुए तथाताडनकीयेहुए उत्पन्नभयाजो क्रोधहै॥ताक्रोधका तिसीकालविषे जोउपशमनहैं ताकानाम अक्रोधहै॥और शास्त्रकीविधिपूर्वक सर्वकर्मोंकाजोसंन्यासहै ताकानामत्यागहै ॥यद्यपि कहां दानकूंभी त्यागकहेहैं ॥ तथापि सोदान पूर्वश्लोकविषे कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं ईहां त्यागशब्दकरिकै सर्वकर्मोंकासंन्यासहीं ग्रहणकरणा ॥ और अंतःकरणका जोउपशमहै ताकानाम शांतिहै ॥ और परोक्षकालविषे अन्यपुरुषकेदोषोंकूं अन्यपुरुषकेआगे जोप्रगटकरणाहै ताकानाम पैशुनहैं ॥ तिसपैशुनके अभावकानाम अपैशुनहै ॥और दुःखीप्राणीयोंऊपरि जाकृपाहै ताकानाम दयाहै ॥ और विषयोंकेसमीपप्राप्तहुएभी तथाभोगकीसामर्थ्यताकेविद्यमानहुएभी जो इंद्रियोंकाअविक्रियपणाहै ताकानाम अलोलुप्त्वहै ॥ और क्रूरस्वभावतैंरहितपणेकानाम मार्दवहै ॥ अर्थात् व्यर्थपूर्वपक्षादिकोंकूंकरणेहारे शिष्यादिकोंकेप्रतिभी अप्रियवाणीतैंरहितहोइकै जोप्रियवाणीकरिकै बोधनकरणाहै ताकानाम मार्दवहै ॥ और नहींकरणेयोग्यकार्यविषयकप्रवृत्तिकेआरंभविषे तिसप्रवृत्तिका प्रतिबंधक जालोकलज्जाहै ताकानाम न्हीहै ॥ और प्रयोजनतैंविनाभी जोवाक् पाणि पाद इत्यादिकइंद्रियोंके व्यापारका करणाहै ताकानाम चापलहै ॥ ताचापलकाजो अभावहै ताकानाम अचापलहै ॥ तहां आर्जवतैंलैके अचापलपर्यंत यह पूर्वउक्त ब्राह्मणके दैवीसंपदरूप असाधारणधर्महैं ॥ इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) तेजःक्षमाधृतिःशौचमद्रोहोनातिमानिता ॥ भवंतिसंपदंदैवीमभिजातस्यभारत ॥ ३ ॥ तेजः । क्षमा । धृतिः । शौचम् । अद्रोहः । नातिमानिता । भवंति । संपदम् । दैवीम् अभिजातस्य । भारत॥३॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभारत तेज क्षमा धृति शौच अद्रोह नातिमानिता यहसर्व सत्त्वगुणमयी वासनाकूं संपादनकरिकैजन्म्येहुएपुरुषकूं प्राप्तहोवैहैं ॥३॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन प्रगल्भताकानाम तेजहै ॥ अर्थात् स्त्रीबालकादिकमूढजनोंकरिकै जो अभिभवकूंनहींप्राप्तहोणाहै ॥ ताकानाम तेजहै ॥ और सामर्थ्यके विद्यमानहुएभी जो परिभवकरणेहारेपुरुषोंऊपरि क्रोधनहींकरणाहै ताकानाम क्षमाहै ॥ और व्याकुलताकूंप्राप्तहुएभीदेहइंद्रियेंके स्थिरताकरणेका जो प्रयत्न विशेषहै ॥ जिसप्रयत्नविशेषकरिकै स्थिरकऱ्येहुए शरीरइंद्रिय व्याकुलताकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ ताप्रयत्नविशेषकानाम धृतिहै ॥ यह तेज क्षमा धृति तीनों क्षत्रियके दैवीसंपदरूप असाधारणधर्महैं ॥ और धनादिकअर्थोंकेसंपादनादिकोंविषे जो माया अनृतआदिकोंतैंरहितपणाहै ताकानाम शौचहै ॥ यहशौच अंतरकाशौचहीं जानणा ॥ मृत्तिकाजलादिकोंकरिकैजन्य शरीरकीशुद्धिरूप बाह्यशौचका ईहां शौचशब्दकरिकै ग्रहणकरानहीं ॥ काहेतैं तिसशौचकूं शरीरकीशुद्धिरूपताकरिकै बाह्यपणाहोणेतैं अंतःकरणकीवासनारूपताहैनहीं ॥ और ईहांप्रसंगविषेतौं सात्विकादिकभेदकरिकैभिन्न अंतःकरणकीवासनावोंकाहीं दैवीआसुरीसंपदरूपकरिकै प्रतिपादन विवक्षितहै ॥ यातैं ताशौचपदकरिकै तिसबाह्यशौचकाग्रहणकरणानहीं ॥ और स्वाध्यायकीन्यांई जिसीकिसीरूपकरिकै तिसबाह्यशौचकूंभी जो वासनारूपअंगीकारकरिये ॥ तौं शौचशब्दकरिकै तिसबाह्यशौचकाभी ग्रहणकरणा इति ॥ और किसीप्राणीकेहननकरणेकीइच्छाकरिकै जो शस्त्रादिकोंकाग्रहणहै ताकानाम द्रोहहै ॥ ताद्रोहतै जोनिवृत्तिहै ताकानाम अद्रोहहै ॥ यह शौच अद्रोह दोनों वैश्यके दैवीसंपदरूप असाधारणधर्महैं ॥ और अत्यंतमानीपणेका नाम अतिमानिताहै ॥ अर्थात् आपणेविषे पूज्यत्वअतिशयकीजाभावनाहै ताकानाम अतिमानिताहै ॥ ताअतिमानिताका जोअभावहै ताकानाम नातिमानिताहै ॥ अर्थात् आपणेकरिकैपूज्य जे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यहतीनवर्णहैं तिनोंकेआगे जोनम्रभावहै ताकानाम नातिमानिताहै ॥ यहनातिमानिता शूद्रका दैवीसंपदरूप असाधारणधर्महै इति ॥ ईहां (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसाऽनाशकेन) इत्यादिकश्रुतियोंनैं आत्मज्ञानके इच्छाकेउपायरूपरिकैकथनकऱ्येअसाधारणरूप तथासाधारणरूप वर्णआश्रमकेधर्महै ॥ तेसर्वधर्मभी ईहां दैवीसंपदरूपकरिकैग्रहणकरणे ॥ इसप्रकार अभयधर्मतैं आदिलैकेनातिमानिताधर्मपर्यंत तीनश्लोकोंकरिकै कथनकऱ्येजे भिन्नभिन्न वर्णआश्रमकेधर्महैं ॥ तेधर्म इसपुरुषविषे उत्पन्नहोवैहैं तहां किसीप्रकारकेपुरुषविषे तेधर्म उत्पन्नहोवैहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान्कहेहै (संपदंदैवींअभिजातस्यइति) हेअर्जुन इसशरीरकेआरंभकालविषे पूर्वलेपुण्यकर्मोंकरिकैअभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुआ जो शुद्धसत्त्वगुणमय वासनावोंकासमूहहै ॥ तिसशुभवासनावोंकासमूहकूं आपणेअंतःकरणविषेप्रादुर्भावहुआदेखिकै जन्मकूंप्राप्तहुआजोपुरुषहै ॥ जिसपुरुषकूं आगेश्रेयकीप्राप्तिहोणीहैं ॥ तिसपुरुषकूंहीं यहअभयादिकधर्म प्राप्तहोवैहैं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (पुण्यःपुण्येनकर्मणाभवति पापःपापेन ॥) अर्थयह ॥ पूर्वपूर्वजन्मकेपुण्यकर्मकीवासनाकरिकै यहपुरुष उत्तरउत्तरजन्मविषे पुण्यवान्हो

वैहै ॥ और पूर्वपूर्वजन्मकेपापकर्मकीवासनाकरिकै यहपुरुष उत्तरउत्तरजन्मविषे पापवान्होवैहै इति ॥ ईहां (हेभारत) इससंबोधनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ शुद्धवंशविषेउत्पन्नहोणेतैं तूं अर्जुन अत्यंतपवित्रहैं ॥ यातैं तूंअर्जुन इनपूर्वउक्त दैवीसंपदरूपधर्मोंकेसंपादनकरणेकूंयोग्यहैं इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वतीनश्लोकोंकरिकै ग्राह्यतारूपकरिकै दैवीसंपदकूं कथनकऱ्या ॥ अब श्रीभगवान् परित्यागरूपकरिकै आसुरीसंपदकूं एकश्लोककरिकै संक्षेपतैं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) दंभोदर्पोऽतिमानश्चक्रोधःपारुष्यमेवच ॥ अज्ञानंचाभिजातस्यपार्थसंपदमासुरीम् ॥४॥ दंभः । दर्पः । अतिमानः चँ । क्रोधः । पारुष्यम् । एव । चँ । अज्ञानं । चँ । अभिजातस्य । पार्थ । संपदम् । आसुरीम्॥४॥(इतिपदच्छेदः)॥ हेपार्थ रजोतमोगुणमय अशुभवासनाकूं संपादनकरिकैजन्म्येहुएपुरुषकूं दंभ दर्प तथा अतिमान क्रोध तथा पारुष्य तथा अज्ञान यहदोषहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ ४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन आपणेमहान्पणेकीसिद्धिवासतै लोकोंकेसमीप आपणेकूं अत्यंतधर्मात्मापणेकरिकै जो प्रसिद्ध करणाहै ताकानाम दंभहै ॥ और धन विद्या कुल स्वजन रूप कर्म इत्यादिकहैंनिमित्तजिसविषे ऐसाजो श्रेष्ठपुरुषोंकेअपमानकरणेकाहेतुभूत गर्वविशेषहै ताकानाम दर्पहै ॥ और आपणेविषे जो अत्यंतपूज्यत्वरूप अतिशयताका आरोपहै ताकानाम अतिमानहै ॥ जिसअतिमानकरिकै असुर पराभवकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ यहवार्त्ता (देवाश्चासुराश्चोभये प्राजापत्याः पस्पृधिरेततोऽसुराअतिमानेनैवकस्मिन्वयंजुहुयामेतिस्वेष्वेवास्येषुजुह्वतश्चेरुस्तेऽतिमानेनैव पराबभूवुस्तस्मान्नातिमन्येत पराभवस्यह्येतन्सुखंयदतिमानः इति ॥) इसशतपथब्राह्मणविषे कथनकरीहै ॥ और आपणे अनिष्टकरणेविषे तथापरकेअनिष्टकरणेविषे प्रवृत्तिकरावणेहारा जोअभिज्वलनरूप अंतःकरणकीवृत्तिविशेषहै जिसकूं क्षोभभीकहेहैं ताकानाम क्रोधहै ॥ और प्रत्यक्ष अत्यंतरूक्षवचनकाजोउच्चारणहै ताकानाम पारुष्यहै ॥ ईहां (पारुष्यमेवच) इसवचनविषे स्थित जो चकारहै ॥ सोचकार ईहां नहींकथनकऱ्येहुएजे भावरूप चपलतादिकदोषहैं तिनसर्वदोषोंकेसमुच्चयकरावणेवासतैहै ॥ और यहकार्य हमारेकूं करणेयोग्यहै यहकार्य हमारेकूं नहींकरणेयोग्यहै याप्रकारकाजो कर्त्तव्यविषयकहै ताविवेककेअभावकानाम अज्ञानहै ॥ ईहां (अज्ञानंच) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै ॥ सोचकार ईहांनहींकथनकऱ्येहुए जेअभावरूप अधृतिआदिकदोष हैं तिन दोषोंकेभी समुच्चयकरावणे वासतैहै ॥ तहां ऐसे दंभादिकदोष किसपुरुषकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (आसुरींसंपदंअभिजातस्यइति) हेअर्जुन इसशरीरकेआ

रंभकालविषे पूर्वलेपापकर्मोंकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुआ तथा असुरपुरुषोंकेप्रीतिकाविषय ऐसाजो रजोतमोगुणमय अशुभवासनावोंका समूह है ॥ तिसअशुभवासनावोंकेसमूहकूं आपणेअंतःकरणविषेप्रादुर्भावहुआदेखिकैं जन्मकूंप्राप्तहुआजोपुरुषहै जिसपुरुषका आगेअश्रेयहोणाहै ॥ ऐसेनिंदित पुरुषकूं तेदंभतैंलेकेअज्ञानपर्यंत सर्वदोषहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ पूर्वउक्त अभयादिकगुण तिसपुरुषकूं कदाचित्भी प्राप्तहोवैंनहीं ॥ ईहां (हेपार्थ) इससंबोधनकेकहणे करिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ विशुद्धकुलविषेउत्पन्नहुई पृथामाताका तूंपुत्रहैं ॥ यातैं इसदंभदर्पादिक असुरसंपदके तूं योग्यन हींहै इति ॥ ईहां मूलश्लोकविषे (अतिमानश्च) इसपदकेस्थानविषे (अभिमानश्च) इसप्रकारकापाठ यद्यपि बहुतपुस्तकोंविषेहै ॥ तथापि श्रीभाष्यकारोंनैं तथाभाष्यकेव्याख्यानकर्त्ता श्रीस्वामीआनंदगिरिनैं तथाश्रीस्वामिमधुसूदननैं (अतिमानश्च) इसप्रकारकेपाठकूंअंगीकारकरिकैहीं व्याख्यानकऱ्याहै ॥ यातैं ईहां (अतिमानश्च) इसप्रकारकाहींपाठलिख्याहै इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व च्यारिश्लोकोंकरिकै दैवीसंपद तथाआसुरीसंपद यहदोप्रकारकासंपद कथनकऱ्या ॥ अब श्रीभगवान् इनदोनोंसंपदोंके भिन्नभिन्न फलकूं कथनकरेहै ॥ अधिकारीजनोंकूं तिसदैवीसंपदविषेप्रवृत्तकरणेवासतै तथातिसआसुरी संपदतैंनिवृत्तकरणेवासतै ॥

(मू० श्लो०) दैवीसंपद्विमोक्षायनिबंधायासुरीमता ॥ माशुचःसंपदंदैवीमभिजातोसिपांडव ॥ ५ ॥ दैवीसंपत् । विमोक्षाय । निबंधाय । आसुरी । मता । मा । शुचः । संपदम् । दैवीं । अभिजातः । असि । पांडव ॥ ५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन दैवीसंपत् मोक्षवासतै होवैहै और आसुरीसंपत् बंधकेवासतै मानीहै ॥ हेपांडव तूं दैवी संपदकुं संपादनकरिकैजन्म्या है यातैं तूं मत शोककर ॥ ५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इनच्यारिवर्णोंकेमध्यविषे ॥ तथा ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास इनच्यारिआश्रमोंकेमध्यविषे जिसजिस वर्णकेप्रति तथाजिसजिसआश्रमकेप्रति वेदभगवान्नैं जाजा फलकी इच्छातैंरहित सात्त्विकीक्रिया विधानकरीहै ॥ सासाक्रिया तिसीतिसीवर्णकी तथातिसी तिसीआश्रमकी दैवीसंपत्कहीजावैहै ॥ सादैवीसंपत् सत्त्वशुद्धि भगवद्भक्ति ज्ञानयोगव्यवस्थिति इतनैंपर्यंत सिद्धहुई इसअधिकारीपुरुषकूं संसारबंधनतैं विमोक्ष वासतैहींहोवैहै ॥ अर्थात् सादैवीसंपत् इसअधिकारीपुरुषकूं कैवल्यमोक्षकीहीं प्राप्तिकरेहै ॥ यातैं आपणेश्रेयकीइच्छाकरणेहारेपुरुषोंनैं सादैवीसंपतहीं ग्रहण करणेयोग्यहै इति ॥ और तिनच्यारिवर्णोंकेमध्यविषे ॥ तथा तिनच्यारिआश्रमोंकेमध्यविषे ॥ जिसाजिसवर्णकेप्रति तथाजिसाजिसआश्रमकेप्रति वेदभगवा

नूनैं जाजा फलकीइच्छापूर्वक तथाअहंकारपूर्वक राजसीतामसीक्रिया निषेधकरीहै ॥ सासानिषिद्धक्रिया तिसतिसवर्णकी तथातिसतिसआश्रमकी आसुरीसंपत् कहीजावैहै ॥ इसीआसुरीसंपत्‌विषेहीं राक्षसीप्रकृतिका अंतर्भावहै ॥ साआसुरीसंपत्‌तौं नियमतैं संसाररूपबंधकेवासतैहीं शास्त्रोंकूं तथाशास्त्रवेत्तापुरुषोंकूं संमतहै ॥ अर्थात् सर्वशास्त्र सर्वशास्त्रवेत्तापुरुष तिसआसुरसिंपत्‌कूं वारंवार जन्ममरणरूपसंसारबंधकाही कारण कहेहैं ॥ यातैं श्रेयकेप्राप्तिकीइच्छावान् अधिकारीपुरुषौंनें साआसुरीसंपत् अवश्यकरिकैपरित्यागकरणेयोग्यहै ॥ तहां मैंअर्जुन दैवीसंपद्‌करिकैयुक्तहूं अथवा आसुरीसंपद्‌करिकैयुक्तहूं इसप्रकारके संशययुक्तअर्जुनकेप्रति श्रीभगवान् धैर्यदेवैहै (माशुचःइति) हेअर्जुन मैंअर्जुन आसुरीसंपदकरिकैयुक्तहूं इसप्रकारकीशंकाकारिकै तूं शोककूं मतप्राप्तहोउ॥ जिसकारणतैं तूंअर्जुनभी इसशरीरकेआरंभकालविषे पूर्वलेपुण्यकर्मोंकारिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुई सात्त्विकीशुभवासनावोंकूं आपणेअंतःकरणविषे प्रादुर्भावहुआदेखिकैहीं इसजन्मकूंप्राप्तहुआहैं ॥ अर्थात् इसजन्मतैंपूर्वभी तुमनैं कल्याणकाहींसंपादनकऱ्याहै और आगेभी तुमाराकल्याणहींहोणाहै॥ इसकारणतैं आपणेविषेआसुरीसंपदकीशंकाकारिकै तुमारेकूंशोककरणाउचितनहींहै इति॥ ईहां (हेपांडव) इससंबोधनकेकहणेकारिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या॥ जबी पांडुराजाकेदूसरेपुत्रोंविषेभी सादैवीसंपत्‌प्रसिद्धहीं देखणेविषेआवैहै ॥ तबी मैंपरमेश्वरकेअनन्यभक्ततैंअर्जुनविषे सादैवीसंपत्‌है याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ ५ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ ॥ हेभगवन् राक्षसीप्रकृतिकातौं आसुरीसंपत्‌विषे अंतर्भावहोवो ॥ काहेतैं शास्त्रनिषिद्धक्रियाकीअभिमुखता आसुरीसंपदविषे तथाराक्षसीप्रकृतिविषे तुल्यहींहै ॥ और किसीस्थलविषे आसुरीसंपत् राक्षसीप्रकृति इनदोनोंका जो भिन्नभिन्नकथनकऱ्याहै ॥ सोभी विषयभोगकीप्रधानताकरिकै तथाजीवहिंसाकीप्रधानताकारिकै संभवहोइसकेहै ॥ परंतु दैवीसंपत् आसुरीसंपत् इनदोनोंतैंभिन्न तीसरीमानुषीप्रकृतितौं जुदाहींहै ॥ काहेतैं श्रुतिविषे सामानुषीप्रकृति जुदाहींकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (त्रयाःप्राजापत्याःप्रजापतौपितरि ब्रह्मचर्यमूषुर्देवामनुष्याअसुराइति) ॥ अर्थयह ॥ प्रजापतितैंउत्पन्नहुए देवता मनुष्य असुर यहतीनों तिसप्रजापतिपिताकेसमीप ब्रह्मचर्य कूंकरतेभये इति ॥ यातैं सातीसरी मानुषीप्रकृतिभी आसुरीसंपत्‌कीन्यांई हेयकोटिविषे कहीचहिये अथवा दैवीसंपत्‌कीन्यांई उपादेयकोटिविषे कहीचहिये ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू० श्लो०) द्वौभूतसर्गौलोकेऽस्मिन्दैवआसुरएवच ॥ दैवोविस्तरशःप्रोक्तःआसुरंपार्थमेशृणु ॥ ६ ॥ द्वौ[४] । भूतसर्गौ[६] । लोके[३] । अस्मिन्[२] । दैवः । आसुरः । एव । च । दैवः । विस्तरशः[११] । प्रोक्तः[१२] । आसुरम्[१३] । पार्थ । मे[१४] । शृणु[१६] ॥ ६ ॥ (इतिपदच्छेदः)॥

हेपार्थ इस लोकविषे दोप्रकारके हीं भूतसर्गहैं एकतौं दैवसर्गहै और दूसरा आसुरसर्गहै तहां दैवसर्गतौं हमनैं तुमारेप्रति पूर्व विस्तारतैं कथनकऱ्याहै अब दूसरे आसुरसर्गकूं तूं हमारेतैं श्रवणकर ॥ ६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इससंसारविषे दोप्रकारकेहीं भूतसर्गहैं ॥ अर्थात् दोप्रकारकीहीं मनुष्योंकीसृष्टिहै ॥ तहां तेदोप्रकारकेसर्ग कौंनहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं ॥ (दैवआसुरएवच) हेअर्जुन एकतौं दैवसर्गहै ॥ और दूसरा आसुरसर्गहै ॥ इनदोनोंसर्गोंतैंभिन्न तीसराकोई राक्षससर्ग अथवा मानुष्यसर्ग हैनहीं ॥ तहां जोमनुष्य जिसकालविषे शास्त्रजन्यसंस्कारोंकीप्रबलताकरिकै स्वभावसिद्धरागद्वेषकूं अभिभवकरिकै केवल धर्मपरायणहींहोवैहै ॥ सोमनुष्य तिसकालविषे देवकह्याजावैहै ॥ और जोमनुष्य जिसकालविषे स्वभावसिद्धरागद्वेषकी प्रबलताकरिकै शास्त्रजन्यसंस्कारोंकूं अभिभवकरिकै केवल अधर्मपरायणहीं होवैहै ॥ सोमनुष्य तिसकालविषे असुर कह्याजावैहै ॥ इसरीतिसैं दोप्रकारकाहीं मनुष्यसर्गसिद्धहोवैहै ॥ जिसकारणतैं धर्म अधर्म इनदोनोंतैं भिन्न तीसरीकोईकोटिहैनहीं ॥ किंतु लोकविषे तथावेदविषे धर्म अधर्म यहदोकोटिहीं प्रसिद्धहै ॥ तहां दोप्रकारकाहीं भूतसर्गहै यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथन करीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (द्वयाहप्राजापत्या देवाश्चासुराश्च ततःकनीयसाएवदेवाज्यायसाअसुराः) ॥ अर्थयह ॥ प्रजापतितैंउत्पन्नहुए दोप्रकारकेहीं भूतसर्गहैं ॥ एकतौं देवहैं दूसरेअसुरहैं ॥ तहां असुरोंतैं देवताछोटेहैं ॥ और देवतावोंतैं असुरबडेहैं इति ॥ और दम दान दया इनतीनोंका विरोधकरणेहाराजो (त्रयाःप्राजापत्याः) इत्यादिकवाक्यहै ॥ तिसवाक्यविषेतौं दम दान दया इनतीनोंतैंरहित मनुष्यहीं असुरभाववालेहुए किसीसमानधर्मकरिकै देवकह्येजावैहैं तथा मनुष्यकह्येजावैहैं तथा असुरकह्येजावैहैं ॥ यातैं तिसवाक्यतैं तीसरेभूतसर्गकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ तहां तिसप्रसंगविषे प्रजापतिनैं एकहीं दम इसअक्षरकरिकै दमतैंरहितमनुष्योंके प्रतितौं इंद्रियोंकानिग्रहरूपदमका उपदेशकऱ्याहै॥और दानतैंरहितमनुष्योंकेप्रतितौं दानकाउपदेशकऱ्याहै॥और दयातैंरहितमनुष्योंकेप्रतितौं दयाकाउपदेशकऱ्याहै इसप्रकार एकमनुष्यत्वजातिवालेमनुष्योंकेप्रतिहीं प्रजापतिनैं अधिकारभेदतैं दम दान दया इनतीनोंकाउपदेशकऱ्याहै ॥ कोईतिसवचनविषे परस्परविजातीय देव असुर मनुष्य यहतीनों विवक्षितनहींहैं ॥ जिसकारणतैं शास्त्रकेउपदेशका एकमनुष्यहीं अधिकारीहोवैहै ॥ देवता तथाअसुर शास्त्रउपदेशकेअधिकारीहोवैंनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ राक्षसीप्रकृति तथामानुषीप्रकृति यहदोनोंप्रकृतियां आसुरीसंपत्त्विषेहीं अंतर्भूतहैं ॥ ताआसुरीसंपत्तैं तेदोनों भिन्ननहींहैं ॥ यातैं देवसर्ग आसुरसर्ग यहदोप्रकारकेहीं भूतसर्गहैं यहजो पूर्ववचनकह्याथा सोयुक्तहींहै इति ॥ हेअर्जुन तिनदोप्रकारकेभूतसर्गोंविषे प्रथमजो दैवभूतसर्गहै ॥ सोदैवभूतसर्गतौं हमनैंतुमारेप्रति पूर्व विस्तारतैंकथनकऱ्याहै ॥ तहां द्वितीयअध्यायविषेतौं स्थितप्रज्ञपुरुषकेलक्षणविषे सोदैवभूतसर्ग कथनकऱ्याहै और द्वादशेअध्यायविषेतौं

भगवद्भक्तकेलक्षणविषे सोदैवभूतसर्ग कथनकऱ्याहै ॥ और त्रयोदशेअध्यायविषेतौं ज्ञानकेलक्षणविषे सोदैवसर्ग कथनकऱ्याहै ॥ और चतुर्दशेअध्यायविषेतौं गुणातीतपुरुषकेलक्षणविषे सोदैवसर्ग कथनकऱ्याहै ॥ और इसषोडशेअध्यायविषेतौं (अभयंसत्त्वसंशुद्धिः) इत्यादिकवचनोंकरिकै सोदैवसर्ग कथनकऱ्याहै ॥ अब दूसरे असुरभूतसर्गकूं मैंविस्तारतैं प्रतिपादनकरताहूं ॥ तिसकूं तूं श्रवणकर ॥ अर्थात् तिसअसुरभूतसर्गकेपरित्यागकरणेवासतै प्रथम तिसआसुरभूतसर्गकूं तूं निश्चयकर ॥ काहेतैं जिसअनिष्टपदार्थका भलीप्रकारतैंज्ञानहोवैहै ॥ सोअनिष्टपदार्थहीं परित्याग कऱ्याजावैहै ॥ तिसपदार्थकेस्वरूपजानेतैंविना तिसपदार्थका परित्यागकऱ्याजावैनहीं इति ॥ तहां (हेपार्थ) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनविषे आपणासंबंधीपणा कथनकऱ्या । ताकरिकै अर्जुनविषयक उपेक्षाकाअभाव सूचनकऱ्या ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वर कदाचित्भी तुमारीउपेक्षानहींकरौंगा इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् परित्यागकरणेयोग्यआसुरीसंपद्कूं प्राणीयोंकाविशेषणरूपकरिकै कथनकरैहै (तानहंद्विषतःक्रूरान्) इसश्लोकतैंपूर्वस्थित द्वादशश्लोकोंकरिकै ॥

(मू० श्लो०) प्रवृत्तिंचनिवृत्तिंचजनानविदुरासुराः ॥ नशौचंनापिचाचारोनसत्यंतेषुविद्यते ॥ ७ ॥ प्रवृत्तिं । च । निवृत्तिं । च । जनाः । न । विदुः । आसुराः । न । शौचं । न । अपि । च । आचारः । न । सत्यं । तेषु । विद्यते ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन असुरस्वभाववाले मनुष्य धर्मकूं तथा अधर्मकूं नहीं जानतेहैं इसकारणतैंहीं तिनआसुरमनुष्योंविषे शौच नहीं रहेहै तथा आचार भी नहीं रहेहै तथासत्यभी नहीं रहेहै ॥ ७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन दंभदर्पादिरूपअसुरस्वभाववाले मनुष्य प्रवृत्तिकूंभी जानतेनहीं ॥ अर्थात् प्रवृत्तिकाविषयभूत जोधर्महै तिसधर्मकूंभी तेआसुरमनुष्य जानते नहीं ॥ ईहां (प्रवृत्तिंच) इसवचनविषेस्थितजो चकारहै ॥ ताचकारकरिकै तिसधर्मकेप्रतिपादकविधिवाक्यका ग्रहणकरणा ॥ अर्थात् ताधर्मकेप्रतिपादकविधिवाक्यकूंभी तेआसुरमनुष्य जानतेनहीं ॥ तथा तेआसुरमनुष्य निवृत्तिकूंभी जानतेनहीं ॥ अर्थात् निवृत्तिकाविषयभूतजोअधर्महै ॥ तिसअधर्मकूंभी तेआसुरमनुष्य जानतेनहीं ॥ ईहां (निवृत्तिंच) इसवचनविषेस्थित जोचकारहै॥ ताचकारकरिकै तिसअधर्मकेप्रतिपादकनिषेधवाक्यका ग्रहणकरणा ॥ अर्थात् ताअधर्मकेप्रतिपादक निषेधवाक्यकूंभी तेआसुरमनुष्य जानतेनहीं ॥ इसीकारणतैंहीं तिनआसुरमनुष्योंविषे बाह्यशौच तथाअंतरशौच यहदोप्रकारकाशौचभी नहींरहेहै ॥ तहां जलमृत्तिकादिकोंकरिकै जाशरीरकीशुद्धिहै ताकानाम बाह्यशौचहै ॥ और मैत्रीकरुणादिकोंकरिकै जोरागद्वेषादिकोंतैंरहितपणाहै ताकानाम अंतरशौचहै ॥ और मनुआदिकश्रेष्ठपुरुषोनैं धर्मशास्त्रविषे कथनकऱ्याजोआचारहै ॥ सोआचारभी तिनआसुरमनुष्योंविषे रहतानहीं ॥ तथा प्रिय हित यथार्थ

भाषणरूप जोसत्यहै ॥ सोसत्यभी तिनआसुरपुरुषोंविषे रहतानहीं ॥ ऐसे शौचतैंरहित तथाआचारतैंरहित तथामिथ्यावादी मायावीअसुरमनुष्य इसलोकविषेभी प्रसिद्धहींहै इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् प्रवृत्तिकाविषयभूत जोधर्महै ॥ तथा निवृत्तिकाविषयभूतजोअधर्महै ॥ तिनधर्मअधर्मदोनोंकाप्रतिपादक वेदरूपप्रमाण विद्यमानहींहै ॥ कैसाहेसोवेदरूपप्रमाण ॥ भ्रमप्रमादआदिकसर्वदोषोंतैंरहितहै॥ तथा साक्षात् परमेश्वरकीआज्ञारूपहै॥ तथा सर्वलोकोंविषेप्रसिद्धहै ॥ और तिसवेदकेअनुसारी स्मृति पुराण इतिहास आदिकभी तिसधर्मअधर्मकेप्रतिपादक विद्यमानहींहै ॥ ऐसे प्रमाणभूत वेदोंके तथास्मृतिपुराणइतिहासआदिकोंके विद्यमानहुएभी तिनआसुरपुरुषोंकूं तिसधर्मअधर्मकाअज्ञान तथाताकेप्रमाणकाअज्ञान किसकारणतैंहोवै ॥ और तिनपुरुषोंकूं ताधर्मअधर्मके तथाताकेबोधकप्रमाणके ज्ञानहुए वेदरूपआज्ञाकेउल्लंघनकरणेहारेपुरुषोंकूंशासनाकरणेहारे परमेश्वरकेविद्यमानहुए तिनपुरुषोंकूं वेदउक्तअर्थकानअनुष्ठानकरिकै शौचआचारादिकोंतैंरहितपणाभी किसकारणतैंहोवैहै ॥ जिसकारणतैं दुष्टजनोंकूंशासनाकरणेहारा परमेश्वरभी लोकविषे तथावेदविषे प्रसिद्धहींहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाके हुए श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू० श्लो०) असत्यमप्रतिष्ठंतेजगदाहुरनीश्वरम् ॥ अपरस्परसंभूतंकिमन्यत्कामहैतुकम् ॥८॥ असत्यं । अप्रतिष्ठं । ते । जगत् । आहुः । अनीश्वरम् । अपरस्परसंभूतं । किं । अन्यत् । कामहैतुकम् ॥८॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तेआसुरपुरुष इसजगतकूं असत्य अप्रतिष्ठ अनीश्वरम् अपरस्परसंभूत कामहैतुक कहेहैं इसजगतका दूसराकोईकारण नहींहै ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तेआसुरपुरुष इसजगत्कूं असत्यकहेहैं ॥ तहां प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै नहींबाधकूंप्राप्तहुआहैतात्पर्यका विषय जिसका ऐसाजो तत्त्ववस्तुका बोधक वेदरूपप्रमाणहै तथा तिसवेदरूपप्रमाणकेअनुसारी जेस्मृति पुराण इतिहास आदिकहैं तिनोंकानाम सत्यहै ॥ ऐसासत्य नहींहैंविद्यमान जिसविषे ताकानाम असत्यहै ॥ ऐसाअत्यरूप इसजगत्कूं कहेहैं ॥ यद्यपि ॥ ऋगादिकच्यारिवेद तथामनुस्मृतिआदिकस्मृतियां तथाभागवतादिकअष्टादशपुराण तथामहाभारतादिकइतिहास प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्धहैं ॥ तिनप्रत्यक्षसिद्धवेदादिकोंकानिषेधकरणा संभवतानहीं ॥ तथापि तेआसुरपुरुष तिनवेदोंकी तथास्मृति पुराणइतिहासआदिकोंकी प्रमाणताकूंअंगीकारकरतेनहीं ॥ यातैं प्रमाणतारूपविशेषणकेअभावतैं तिसप्रमाणताविशिष्टवेदादिकोंकाअभाव कथनकऱ्याहै ॥ और असत्यहोणेतैंहीं इसजगत्कूं तेआसुरपुरुष अप्रतिष्ठ कहेहैं ॥ तहां नहींहै धर्मअधर्मरूपप्रतिष्ठा व्यवस्थाकाहेतु जिसका ताकानाम अप्रतिष्ठहै ॥ अर्थात् तेआसुरपुरुष धर्मअधर्मकूं इसजगत्केव्यवस्थाकाहेतु मानतेनहीं ॥ तथा ते आसुरपुरुष इसजगत्कूं अनीश्वर कहेहैं ॥ तहां शुभअशुभकर्मके सुखदुःखरूपफलके

देणेविषे नहींहै ईश्वर नियंता जिसका ताकानाम अनीश्वरहै ॥ ऐसाअनीश्वर इसजगत्कूं कहेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ बलवान्पापरूपप्रतिबंधकेवशतैं ते आसुरपुरुष वेदोंकूं तथास्मृतिपुराणइतिहासादिकोंकूं प्रमाणरूपमानतेनहीं ॥ इसीकारणतैंहीं तेआसुरपुरुष तिनवेदस्मृतिआदिकोंकरिकैबोधित धर्म अधर्मकूं तथाईश्वरकूं अंगीकारकरतेनहीं ॥ इसीकारणतैंहीं तेआसुरपुरुष निर्भयहोइके निषिद्धआचरणकूंहींकरेहैं ॥ तानिषिद्धआचरणकरिके तेआसुरपुरुष धर्मरूपपुरुषार्थतैं तथामोक्षरूप पुरुषार्थतैं भ्रष्टहींहोवैहैं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् केवलशास्त्रप्रमाणकरिकैजानणेयोग्य जोधर्मअधर्महै ॥ ताधर्मअधर्मकीसहायताकरिके इससर्वजगत्काकारणरूप जोप्रकृतिकाअधिष्ठातापरमेश्वरहै ॥ ताकारणरूपपरमेश्वरतैंरहित इसजगत्कूं तेआसुरपुरुष जो अंगीकारकरैंगे ॥ तौंकारणकेअभावहुए तिसजगत्रूपकार्यकी उत्पत्ति तिनोंकेमतविषे कैसेहोवैगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (अपरस्परसंभूतंइति) हेअर्जुन तेआसुरपुरुष इसजगत्कूं ईश्वरतैंउत्पन्नहुआ मानतेनहीं ॥ किंतु इसजगत्कूं अपरस्परसंभूत मानेहैं ॥ अर्थात् विषयसुखकी अभिलाषारूपकामनैं प्रेरणाकऱ्याहै पुरुषहै तथास्त्रीहै तिसपुरुषस्त्रीदोनोंकेसंयोगतैंहीं यहजगत् उत्पन्नहुआहै ॥ यातैंयहजगत् कामहैतुकहै ॥ अर्थात् इसजगत्का सोकामहीं कारणहै ॥ ताकामतैंभिन्न दूसराकोई इसजगत्काकारणहैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसजगत्कीउत्पत्तिविषे धर्मअधर्मकूंभी कारणमान्याचाहिये ॥ काहेतैं जो कदाचित् धर्मअधर्मकूं इसजगत्काकारण नहींमानिये ॥ तौं इसजगत्विषे कोईप्राणी दुःखीहै कोईप्राणी सुखीहै कोईप्राणी मूर्खहै कोईप्राणी पंडितहै इसप्रकारकीव्यवस्था नहींहोवैगी ॥ और धर्मअधर्मकूं इसजगत्काकारण मानणेविषे साव्यवस्था सिद्धहोइसकेहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (किमन्यत्इति) हेअर्जुन तेआसुरपुरुष धर्मअधर्मरूपअदृष्टकूं इसजगत्का कारणमानतेनहीं ॥ काहेतैं धर्मअधर्मरूपअदृष्टकेअंगीकारकीयेहुएभी अंतविषे स्वभावविषेहीं परिअवसानहोवैगा ॥ तास्वभावकरिकैहीं इसजगत्विषे सुखदुःखादि कोंकीविचित्रता संभवहोइसकेहै ॥ ताविचित्रताकेवासतैं धर्मअधर्मरूपअदृष्टकीकल्पना काहेवासतैंकरणी ॥ और शास्त्रविषेभी यहनियमकह्याहै ॥ (दृष्टेसंभवति अदृष्टकल्पनायाअन्यायत्वात्) ॥ अर्थयह ॥ कार्यकीउत्पत्तिविषे दृष्टकारणकेसंभवहुए अदृष्टकारणकीकल्पनाकरणी अयुक्तहै इति ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ कामहीं सर्वप्राणीयोंकाकारणहै ॥ तिसकामतैंभिन्न दूसराकोई धर्मअधर्मरूपअदृष्ट तथाईश्वरादिक इसजगत्काकारणहैनहीं ॥ इसप्रकार तेआसुरपुरुष इसजगत्कूं केवल कामहेतुकहींकहेहैं ॥ यहपूर्वउक्तदृष्टि देहात्मवादीलोकायतिकपुरुषोंकीकथनकरीहै इति ॥ ८ ॥ ❁ ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहपूर्वउक्त लोकायतिक पुरुषोंकीदृष्टिभी शास्त्रीयदृष्टिकीन्यांई इष्टरूपहीहोवैगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तादृष्टिविषे अनिष्टरूपताकूं कथनकरेहै ॥ मुमुक्षुजनोंकूं तिसदृष्टितैं निवृत्त करणेवासतै ॥

(मू० श्लो०) एतांदृष्टिमवष्टभ्यनष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः ॥ प्रभवंत्युग्रकर्माणःक्षयायजगतोऽहिताः ॥ ९ ॥ एतां । दृष्टिं । अवष्टभ्य । नष्टात्मानः । अल्पबुद्धयः । प्रभवंति । उग्रकर्माणः । क्षयाय । जगतः । अहिताः ॥ ९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन ईसपूर्वउक्त दृष्टिकूं आश्रयणकरिकै ते नष्टात्मा अल्पबुद्धि उग्रकर्मवाले शत्रुपुरुष सर्वप्राणीयोंके नाशकरणेवासते व्याघ्रसर्पादिरूपकरिकै उत्पन्नहोवैहैं ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसपूर्वश्लोकविषेकथनकरीजा लोकायतिकपुरुषोंकीदृष्टिहै ॥ तिसदृष्टिकूंआश्रयकरिकै तेआसुरपुरुष नष्टात्माहोवैहैं ॥ तहां काम क्रोध लोभ मोह इत्यादिरूप रजतमदोषकरिकै नष्टहुआहै क्या आवृतहुआहै आत्मा क्या विवेकबुद्धि जिनोंकी तिनोंकानाम नष्टात्माहै अर्थात् तेआसुरपुरुष परलोकके साधनोंतें भ्रष्टहुएहैं ॥ पुनः कैसेहैंतेआसुरपुरुष अल्पबुद्धिहैं ॥ तहां अत्यंततुच्छ जे स्रक् चंदन वनिता इत्यादिकविषयोंकेभोगहैं तिनोंकानाम अल्पहैं ॥ ऐसेविषयभोगरूप अल्पविषेहैबुद्धिजिनोंकी तिनोंकानाम अल्पबुद्धिहै ॥ अथवा मल मांस रुधिर अस्थि मज्जा इत्यादिकनिंदितपदार्थोंकासमूहरूप जोयहदेहहै ताकानाम अल्पहै ॥ ऐसेअल्पदेहविषेहै अहंबुद्धि जिनोंकी तिनोंकानाम अल्पबुद्धिहै ॥ अर्थात् दृष्टविषयसुखमात्रकाउदेशकरिकैप्रवृत्तहुईहैबुद्धि जिनोंकी तिनोंकानाम अल्पबुद्धिहै ॥ पुनःकैसेहैंतेआसुरपुरुष उग्रकर्माहैं ॥ तहां उग्रहैं क्या अत्यंतक्रूरहैं कर्म जिनोंके तिनोंकानाम उग्रकर्माहै ॥ अर्थात् देहमात्रकापोषणहै प्रयोजन जिनोंका तथाजीवोंकीहिंसाहैप्रधान जिनोंविषे ऐसेजे शास्त्रनिषिद्धकर्महैं ॥ तिननिषिद्धकर्मोंकूंहीं तेआसुरपुरुष सर्वदाकरेहैं ॥ पुनःकैसेहैंतेआसुरपुरुष अहिताहैं ॥ अर्थात् अपकारकरियेतैंविनाहीं सर्वप्राणीमात्रकेशत्रुहैं ॥ इसप्रकार पूर्वउक्त लोकायतिकपुरुषोंकीदृष्टिकूं आश्रयणकरिकै नष्टात्माहुए तथाअल्पबुद्धि हुए तथाउग्रकर्माहुए तथाशत्रुहुए तेआसुरपुरुष सर्वप्राणीमात्रकेनाशकरणेवासतैं व्याघ्रसर्पादिरूपकरिकै उत्पन्नहोवैहैं ॥ यातैं यहपूर्वश्लोकउक्त लोकायतिकपुरुषोंकींदृष्टिहीं अत्यंतअधोगतिकाहेतुहै ॥ इसकारणतैं श्रेयकीइच्छावान्पुरुषोंनैं सर्वप्रकारकरिकै सादृष्टि परित्यागकरणेयोग्यहै इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार व्याघ्रसर्पादिकतामसीयोनियोंविषे बहुतकालपर्यंत भ्रमणकरतेहुए तेआसुरपुरुष जवी किसीकर्मकेवशतैं पुनः मनुष्ययोनिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तवीभी तेआसुरपुरुष आपणेश्रेयकेउपायविषे प्रवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु अश्रेयकेउपायविषेहीं प्रवृत्तहोवैहैं ॥ इसअर्थकूं अव श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) काममाश्रित्यदुष्पूरंदंभमानमदान्विताः ॥ मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान्प्रवर्त्ततेऽशुचिव्रताः ॥ १० ॥ कामं । आश्रित्य । दुष्पूरं । दंभमानमदान्विताः । मोहात् । गृहीत्वा । असद्ग्राहान् । प्रवर्त्तंते । अशुचिव्रताः ॥ १० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन

दुष्पूर कामकूं आश्रयणकरिकै दंभमानमदकरिकैयुक्तहुए तथाअशुचिव्रतवालेहुए तेआसुरपुरुष अविवेकतैं अशुभनिश्चयोंकूं ग्रहणकरिकै वेदविरुद्धकर्मोंविषेहीं प्रवृत्तहोवैहैं ॥ १० ॥ ॥इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन शतकोटीवर्षपर्यंतभी विषयोंकेभोगकरिकै नहींपूर्णहोणेहारा ऐसाजो तिसतिसदृष्टविषयोंकी अभिलाषारूपकामहै ॥ ऐसेदुष्पूरकामकूं आश्रयणकरिकै तेआसुरपुरुष दंभ मान मद इनतीनोंकरिकैयुक्तहोवैहैं ॥ तहां अंतरतैंधर्मनिष्ठातैंरहितहोइकैभी जोबाह्यतैं लोकोंकेआगे आपणाधर्मात्मापणा प्रगटकरणाहै ताकानाम दंभहै ॥ और वास्तवतैं पूज्यभावकेअयोग्यहुएभी जा लोकोंकेआगे आपणापूज्यपणा प्रगटकरणाहै ताकानाम मानहै ॥ और वास्तवतैं अधिकताकाआरोपणहै जो आपणेविषे अधिकताकाआरोपणहै ताकानाम मदहै ॥ जोमद श्रेष्ठपुरुषोंकेअपमानकरणेका हेतुरूपहै ॥ ऐसे दंभ मान मद तीनोंकरिकैयुक्तहुए तेआसुरपुरुष केवलअविवेकतैं असत्ग्राहोंकूंग्रहणकरिकै अर्थात् इसमंत्रकरिकै इसदेवताकूंआराधनकरिकै हम इनस्त्रीयोंका आकर्षणकरैंगे ॥ तथा इसमंत्रकरिकै इसदेवताकूंआराधनकरिकै हम महान्‌निधियोंकूंसंपादनकरैंगे ॥ तथा इसमंत्रकरिकै इसदेवताकूंआराधनकरिकै हम इसशत्रुकूंमारैंगे ॥ इत्यादिक दुराग्रहरूप अशुभनिश्चयोंकूं केवल अविवेकरूपमोहतैं ग्रहणकरिकै तेआसुरपुरुष अशुचिव्रताहोवैहैं ॥ तहां श्मशानादिकदेश तथाउच्छिष्टत्वादिकअवस्था तथामद्यमांसादिकोंकाभक्षण इत्यादिकअशौचकीअपेक्षाकरिकै सिद्धहोणेहारे जेवाममतंत्रउक्तव्रतहैं ॥ तेअशुचिव्रतहैंजिनोंके तिनोंकानाम अशुचिव्रताहै ॥ ऐसेअशुचिव्रतहुए तेआसुरपुरुष केवल दृष्टफलकीप्राप्तिकरणेहारे क्षुद्रदेवतावोंकाआराधनरूप जिसीकिसी वेदविरुद्धकर्मविषेहीं प्रवृत्तहोवैहैं॥ ऐसेआसुरपुरुष मरिकै अशुचिनरकविषे पतनहोवैहैं ॥ इसप्रकारतैं इसश्लोकका (पतंतिनरकेऽशुचौ) इसवक्ष्यमाणवचनकेसाथि अन्वयकरणा इति ॥१०॥

॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् इनपूर्वउक्तआसुरपुरुषोंकूंहीं पुनः आसुरीसंपद्‌रूप अनेकविशेषणोंकरिकै कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) चिंतामपरिमेयांचप्रलयांतामुपाश्रिताः ॥ कामोपभोगपरमाएतावदितिनिश्चिताः ॥ ११ ॥ चिंताम् । अपरिमेयाम् । च । प्रलयांताम् । उपाश्रिताः । कामोपभोगपरमाः । एतावत् । इति । निश्चिताः ॥ ११ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तथा मरणपर्यंतास्थित अपरिमित चिंताकूं जिनोंनेंआश्रयणकऱ्याहै तथा शब्दादिकविषयोंकाभोगहीहैपरमपुरुषार्थजिनोंकूं तथा यहविषयजन्यदृष्टहींसुखहै तिसप्रकारहै निश्चयजिनोंका ॥ ११ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अप्राप्तवस्तुकीप्राप्तिरूप जोयोगहै ॥ तथा प्राप्तवस्तुकापरिरक्षणरूपजोक्षेमहै ॥ तिसआपणेयोगक्षेमकेउपायकाचिंतनरूप जाचिंताहै ॥

कैसीहैसाचिंता अपरिमेयहै ॥ अर्थात् असंख्यातपदार्थविषयकहोणेतैंसाचिंताभी असंख्याताहै ॥ साचिंता इतनीसंख्यावालीहै इसप्रकारतैं निश्चयकरणेकूंअशक्य है ॥ पुनः कैसीहैसाचिंता प्रलयांताहै ॥ ईहां मरणकानाम प्रलयहै ॥ सोमरणरूपप्रलयहैअंतजिसका ताकानाम प्रलयांताहै ॥ अर्थात् जीवत्कालपर्यंत वर्त्तमानहै ॥ ऐसीअपरिमेय तथाप्रलयांत चिंताकूं तेआसुरपुरुष आश्रयणकरेहैं ॥ ईहां (चिंतामपरिमेयांच) इसवचनविषेस्थित जोचकारहै ॥ सोचकार पूर्वउक्तअशुचिव्रतकेसमुच्चयकरावणेवासतैंहै ॥ अर्थात् तेअसुरपुरुष केवल अशुचिव्रतवालेहुए तिनवेदविरुद्धकर्मोंविषे प्रवृत्तहोतेनहीं ॥ किंतु इसप्रकारकीचिंताकूं आश्रयणकरतेहुएभी तेआसुरपुरुष तिनवेदविरुद्धकर्मोंविषेप्रवृत्तहोवेहैं इति ॥ हेअर्जुन तेआसुरपुरुष सर्वकालविषे अनंतचिंतावोंकरिकैयुक्तहुएभी कदाचित्भी परलोककीचिंताकरिकैयुक्तहोतेनहीं ॥ किंतु तेआसुरपुरुष कामोपभोगपरमाहींहोवेहैं ॥ तहां कृपणपुरुषोंकेकामनाकाविषयभूत जेशब्दस्पर्शादिकदृष्टविषयहैं तिनोंकानाम कामहै ॥ तिनशब्दादिकविषयरूपकामोंकाउपभोगहै परम क्या पुरुषार्थ जिनोंकूं धर्मादिक जिनोंकूं पुरुषार्थरूपहै नहीं तिनोंकानाम कामोपभोगपरमाहै ॥ अर्थात् तेअसुरपुरुष इसलोकके स्रक् चंदन वनिता आदिकविषयोंकेभोगकूंहीं परमपुरुषार्थरूपकरिकैमानेहैं ॥ धर्मकूं तथामोक्षकूं पुरुषार्थरूप मानतेनहीं ॥ शंका हेभगवन् तेआसुरपुरुष जैसे इसलोककेविषयजन्यसुखकीकामनाकरेहैं ॥ तैसे परलोककेउत्तमसुखकीकामना किसवासतैनहींकरतेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (एतावदितिनिश्चिताः) तहां इसलोकविषे शब्दस्पर्शादिकविषयोंकेभोगतैंजन्य जो दृष्टसुखहै सोईहींसुखहै ॥ इसदृष्टसुखतैंभिन्न इसशरीरके वियोगहुएतैंअनंतर भोगणेयोग्यदूसराकोईसुखहैनहीं ॥ काहेतैं इसस्थूलशरीरतैंभिन्नदूसराकोईभोक्ताहैनहीं ॥ जोभोक्ता परलोकविषे जाइकै तिससुखकूंभोगै ॥ किंतु यहस्थूलशरीरहीं भोक्ताआत्माहै ॥ इसप्रकारकेनिश्चयवालेहुए तेआसुरपुरुष परलोककेसुखकीकामनाकरतेनहीं ॥ यहआसुरपुरुषोंकामत बृहस्पतिनैंभी कथनकऱ्याहै ॥ तहांसूत्रम् ॥ (चैतन्यविशिष्टःकायःपुरुषः ॥ कामएवैकःपुरुषार्थः ॥) अर्थयह ॥ चैतन्यरूपधर्मकरिकैविशिष्ट जोयह स्थूल शरीरहै ॥ सोस्थूलशरीरहीं आत्माहै ॥ और इसलोकके स्रक्चंदनवनितादिकविषयोंकाभोगहीं परमपुरुषार्थहै इति ॥ यद्यपि बृहस्पति वैदिकपुरुषहै ॥ तथापि असुरोंकेमोहकरणे वासतै तिसबृहस्पतिनैं इसप्रकारकेसूत्ररचेहैं ॥ याकारणतैंहीं वैदिकपुरुष तिनसूत्रोंकूंप्रमाणरूप मानतेनहीं इति ॥ ११ ॥ ❁ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) आशापाशशतैर्बद्धाःकामक्रोधपरायणाः ॥ ईहंतेकामभोगार्थमन्यायेनार्थसंचयान् ॥ १२ ॥ आशापाशशतैः । बद्धाः । कामक्रोधपरायणाः । ईहंते । कामभोगार्थं । अन्यायेन । अर्थसंचयान् ॥ १२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन आशारूपपाशोंकेसमूहकरिकै बांध्येहुए तथाकामक्रोधदोनोंहैंआश्रयजिनोंके ऐसेतेआसुरपुरुषविषयभोगवासतैहीं अन्यायकरिकै धनादिकपदार्थोंकूं इंच्छतेहैं ॥ १२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसवस्तुकेप्राप्तिकाउपाय करणेकूंअशक्यहै तिसवस्तुकेप्राप्तिकी जाप्रार्थनाहै ताकानाम आशाहै ॥ अथवा जिसवस्तुकेप्राप्तिकाउपाय आपणेकूं ज्ञातनहींहै तिसवस्तुकेप्राप्तिकी जाप्रार्थनाहै ताकानाम आशाहै ॥ तेआशाहीं लोकप्रसिद्धपाशकीन्यांई इसपुरुषकेबंधनकाहेतुहोणेतैं पाशरूपहैं ॥ ऐसे आशारूपपाशोंके अनेकशतोंकरिकै अर्थात् अनेकसमूहोंकरिकै तेआसुरपुरुष बांध्येहुएहैं ॥ अर्थात् जैसे लोकप्रसिद्धरज्जुआदिकपाशोंकरिकैबांध्येहुए चौरादिकदुष्टपुरुष तिनरज्जुआदिकपाशोंनैं आपणेगृहादिकस्थानोंतैंनिकासिकै जहांतहां भ्रमणकराईतेहैं ॥ तैसे आशारूपपाशोंकरिकैबांध्येहुए ययआसुरपुरुषभी तिन आशारूपपाशोंनें श्रेयरूपस्वस्थानतैंनिकासिकैजहांतहां भ्रमणकराईतेहैं ॥ पुनःकैसेहैंतेआसुरपुरुष कामक्रोधपरायणहैं ॥ तहां कामक्रोध यहदोनोंहै परअयन क्या आश्रय जिनोंका तिनोंकानाम कामक्रोधपरायणहै ॥ अर्थात् परस्त्रीयोंकेसंभोगकीअभिलाषाकरिकै तथापरकेअनिष्टकरणेकीअभिलाषाकरिकै तेआसुरपुरुष सर्वदा युक्तहैं ॥ ऐसे आसुरपुरुष केवल स्रक् चंदन वनिता आदिकविषयोंकेभोगवासतैंहीं धनादिकपार्थोंकेएकठेकरणेकीइच्छाकरेहैं ॥ कोईधर्मकेवासतै तेआसुरपुरुष धनादिकपदार्थोंकेएकठेकरणेकीइच्छाकरतेनहीं ॥ और तेआसुरपुरुष विषयभोगवासतै जोधनकेएकठेकरणेकीइच्छाकरेहैं ॥ सोभीशास्त्र उक्तमार्गकरिकै ताधनकेएकठेकरणेकीइच्छाकरतेनहीं ॥ किंतु केवल अन्यायकरिकैहीं ताधनकेएकठेकरणेकीइच्छाकरेहैं ॥ तहां छलकपटकरिकै अथवा बलात्कारसैं जो परकेधनकाहरणकरणाहै ताकानाम अन्यायहै ॥ अर्थात् शास्त्रतैंविरुद्धमार्गकरिकै जोधनकासंपादनकरणाहै ताकानाम अन्यायहै ॥ ईहां (अर्थसंचयान्) इसबहुवचन करिकै श्रीभगवान्नैं तिनआसुरपुरुषोंविषे लोभ दिखाया ॥ काहेतैं तिनआसुरपुरुषोंकूं धनकीप्राप्तिहुएभी तिसधनकीतृष्णा निवृत्तहोतीनहीं॥ किंतु साधनकीतृष्णा दिनदिनविषे वृद्धिकूंप्राप्तहोतीजावैहै ॥ और धनादिकविषयोंकेप्राप्तहुएभी जो दिनदिनविषे तिनविषयोंके तृष्णाकीवृद्धिहै तिसकूंहीं शास्त्रविषे तथालोकविषे लोभकहेहैं इति ॥ १२ ॥ ❁ ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिनआसुरपुरुषोंकेचित्तविषे इसप्रकारकीधनकीतृष्णाहै यहवार्त्ताकैसे जानीजावैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिनआसुरपुरुषोंके इसप्रकारकीधनकीतृष्णाकूं तिनआसुरपुरुषोंके मनोराज्योंके कथनकरिकै वर्णनकरेहै॥

(मू० श्लो०) इदमद्यमयालब्धमिमंप्राप्स्येमनोरथम् ॥ इदमस्तीदमपिमेभविष्यतिपुनर्धनम् ॥१३॥ इदम् । अद्य । मया । लब्धम् । इमं । प्राप्स्ये । मनोरथम् । इदम् । अस्ति । इदम् । अपि । मे । भविष्यति । पुनः । धनम् ॥ १३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ यहधन इसकालविषे हमनैं पायाहै इस मनोरथकूं मैंशीघ्रहीं प्राप्तहोऊंगा तथा यहधन हमारेगृहविषे पूर्वहीं विद्यमानहै तथा यह धन भी अगलेवर्षविषे पुनः बहुतहोवैंगा ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तेआसुरपुरुष निरंतर धनकीतृष्णाकरिकैयुक्तहैं ॥ इसकारणतैंहीं तेआसुरपुरुष इसप्रकारके मनोराज्योंकूंकरेहैं ॥ यहधन हमनैं अबी इस उपायकरिकै पायाहै ॥ और इसधनतैंअन्य दूसरेभी मनकीतुष्टिकरणेहारेधनकूं मैं अबी शीघ्रहींप्राप्तहोवैंगा ॥ और यहधन हमारेगृहविषे पूर्वहीं एकठाकऱ्याहु आहै ॥ सोयहधनभी इसउपायकरिकै अगलेवर्षविषे पुनःबहुतहोवैंगा ॥ इसप्रकार धनकीतृष्णाकरिकैयुक्तहुए तेआसुरपुरुष अशुचिनरकविषे पतनहोवैहैं ॥ इसप्रकारतैं इसश्लोकका (पतंतिनरकेऽशुचौ) इसवक्ष्यमाणवचनकेसाथि अन्वयकरणा इति ॥ १३ ॥ इसप्रकारतिनआसुरपुरुषोंकेतृष्णारूपलोभकावर्णनकरिकै अब तिनआसुरपुरुषोंकेअभिप्रायकेकथनकरिकै तिनआसुरपुरुषोंके क्रोधकाभी वर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) असौमयाहतःशत्रुर्हनिष्येचापरानपि ॥ ईश्वरोहमहंभोगीसिद्धोहंबलवान्सुखी ॥ १४ ॥ असौ । मया । हतः । शत्रुः । हनिष्ये । च । अपरान् । अपि । ईश्वरः । अहं । अहं । भोगी । सिद्धः । अहं । बलवान् । सुखी ॥ १४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हमनैं यह शत्रु हननकऱ्याहै तथा दूसरेशत्रुवोंकूं भी मैं हननकरूंगा मैं ईश्वरहूं तथामैं भोगीहूं तथामैं सिद्धहूं तथाबलवान्हूं तथासुखीहूं ॥ १४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ अत्यंतदुर्जय जोयह देवदत्तनामा हमाराशत्रुथा ॥ सोयहशत्रु हमनैं हननकऱ्याहै ॥ यातैं अबी मैं विनाहींआयासतैं दूसरेभीसर्वशत्रुवोंकूं हननकरूंगा हमारेतैं कोईभीशत्रु जीवनकूंप्राप्तहोवैंगानहीं ॥ ईहां (हनिष्येच) इसवचनविषेस्थितजो चकारहै ॥ ताचकारकरिकै यहअभिप्राय सूचनकऱ्या ॥ तिनशत्रुवोंकूं मैं केवल हननहींनहींकरूंगा ॥ किंतु तिनशत्रुवोंके धनदारादिकपदार्थोंकूंभी मैंहरणकरूंगा इति ॥ शंका ॥ तुमारेतुल्य अथवा ॥ तुमारेतैंभीअधिक दूसरेशत्रु विद्यमानहैं ॥ यातैं सर्वशत्रुवोंकेनाशकरणेकासामर्थ्य तुमारेविषे किसहेतुतैंहै ॥ ऐसीशंकाकेहुए तेआसुरपुरुष कहेहैं ॥ (ईश्वरोहंइति) मैंईश्वरहूं केवल मनुष्यनहींहूं ॥ जिसमनुष्यपणेकरिकै हमारेतुल्य अथवा हमारेतैंअधिककोईपुरुषहोवै ॥ यहअत्यंततुच्छबलवालेदीनजन हमारी क्याहानिकरैंगे ॥ सर्वप्रकारतैं हमारेतुल्य कोईभीप्राणीनहींहै इसअभिप्रायकरिकै तेआसुरपुरुष आपणेईश्वरपणेकूं वर्णनकरेहैं (अहंभोगीइति) जिसकारणतैं मैंहीं भोगीहूं ॥ अर्थात् विषयभोगोंकेसर्वसाधनोंकरिकै मैंहीं युक्तहूं ॥ तथा मैंहीं सिद्धहूं ॥ अर्थात् भ्राता पुत्र भृत्य इत्यादिकसहायकरिकै मैंहीं संपन्नहूं ॥ तथा स्वतःभी मैंबलवान्हूं ॥ अर्थात् अत्यंतओजसवालाहूं ॥ तथा मैंहीं सुखीहूं ॥ अर्थात् सर्वप्रकारतैं नीरोगहूं ॥ इसकारणतैं मैं ईश्वरहींहूं इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ धनकरिकै अथवा कुलकरिकै कोइपुरुष तुमारेतुल्यहोवैंगा ॥ ऐसीशंकाकेहुए तेआसुरपुरुषकहेहै ॥

(मू० श्लो०) आढ्योभिजनवानस्मिकोन्योस्तिसदृशोमया ॥ यक्ष्येदास्यामिमोदिष्यइत्यज्ञानविमोहिताः ॥ १५ ॥ आढ्यः । अभिजनवान् । अस्मि । कः । अन्यः । अस्ति । सदृशः । मया । यक्ष्ये । दास्यामि । मोदिष्ये । इति । अज्ञानविमोहिताः ॥ १५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ धनवान् तथाकुलवान् मैंहींहूं यातैं हमारे सदृश दूसरा कौनहै मैं यागकूंकरूंगा तथादानकूंकरूंगा तिसतैं हर्षकूंप्राप्तहोवूंगा इसप्रकार तेआसुरपुरुष अविवेककरिकैमोहितहोवैहैं ॥ १५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ इसलोकविषे मैंहीं धनवान्हूं ॥ तथा कुलीनभीमैंहींहूं ॥ इसकारणतैं इसलोकविषे धनकरिकै तथा कुलकरिकै हमारेसमान दूसराकौनहै ॥ किंतु हमारेसमानदूसराकोईभीपुरुष धनवान् तथाकुलवान् नहींहै ॥ शंका ॥ धनकरिकै तथाकुलकरिकै तुमारेतुल्य कोईमतहोवो ॥ तौभी यागकरिकै तथादानकरिकै तुमारेतुल्य कोईहोवैगा ॥ ऐसीशंकाकेहुए तेआसुरपुरुष कहेहैं ॥ (यक्ष्येदास्यामिइति) मैंआपणीप्रतिष्ठाकेवासतैं इसप्रकारकेमहान्यागकूंकरौंगा ॥ तिसयाग करिकैभी मैं दूसरेसर्वयागकरणेहारेपुरुषोंकूं अभिभवकरौंगा ॥ यातैं यागकरिकैभी हमारेतुल्य कोईहैनहीं ॥ और हमारीस्तुतिकरणेहारेजे नट भाट नर्त्तकी आदिकहैं ॥ तिननटादिकोंकेतांई मैं बहुत धन देवूंगा ॥ तिसधनकेदेणेतैं मैं नर्त्तकीआदिकोंकेसाथि बहुतहर्षकूंप्राप्तहोवूंगा ॥ यातैं दानकरिकैभी हमारेतुल्य कोईहैनहीं ॥ इसप्रकारतैं तेआसुरपुरुष अविवेकरूपअज्ञानकरिकै मोहितहोवैहैं ॥ अर्थात् तिसअविवेकरूपअज्ञाननैं तेआसुरपुरुष भ्रमकीपरंपरारूप विविधप्रकारकेमोहकूं प्राप्तकरीतेहैंइति ॥ १५ ॥

(मू० श्लो०) अनेकचित्तविभ्रांतामोहजालसमावृताः ॥ प्रसक्ताःकामभोगेषुपतंतिनरकेऽशुचौ ॥ १६ ॥ अनेकचित्तविभ्रांताः । मोहजालसमावृताः । प्रसक्ताः । कामभोगेषु । पतंति । नरके । अशुचौ ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन अनेकदुष्टसंकल्पोंकरिकै विभ्रांतहूए तथामोहरूपजालकरिकैआवृतहुए तथाविषयभोगोंविषे अत्यंतआसक्तहूए तेआसुरपुरुष अशुचि नरकविषे पतन होवैहैं ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वकथनकरेजे अनेकप्रकारकेचित्तकेदुष्टसंकल्पहैं ॥ तिन अनेकचित्तकेदुष्टसंकल्पोंकरिकै विविधप्रकारकीभ्रांतिहुईहै जिनोंकूं तिनोंका नाम अनेकचित्तविभ्रांताहै ॥ अथवा नहींहैंएकवस्तुचिंतनकाविषय जिसका ताकानाम अनेकहै ॥ अनेकहै क्या पूर्वउक्तबहुतविषयोंविषेसंलग्नहै चित्त जिनोंका तिनोंकानाम अनेकचित्तहै ॥ और यहकार्य आदिविषेकरणेयोग्यहै अथवा यहकार्य आदिविषेकरणेअयोग्यहै इसप्रकार विशेषकरिकै जेपुरुष भ्रांतिक

रिकैयुक्तहैं ॥ तिनोंकानाम विभ्रांतहै ॥ अनेकचित्तहोवैं तेहीं विभ्रांतहोवैं तिनोंकानाम अनेकचित्तविभ्रांतहै ॥ अब ताभ्रांतिकीप्राप्तिविषेहेतुकहेहैं (मोहजाल समावृताःइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं तेआसुरपुरुष मोहरूपजालकरिकै आवृतहुएहैं ॥ तिसकारणतैं तेआसुरपुरुष पूर्वउक्तअनेकदुष्टसंकल्पोंकरिकै विविध प्रकारकीभ्रांतिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तहां यहवस्तु हमारेहितकासाधनहै ॥ और यहवस्तु हमारेअहितकासाधनहै इसप्रकारके हितअहितविवेकका जोअसामर्थ्यहै ताकानाम मोहहै ॥ सोमोहहीं आवरणरूपताकरिकै बंधनकाहेतुहोणेतैं लोकप्रसिद्धजालकीन्यांई जालरूपहै ॥ ऐसेमोहरूपजालकरिकै तेआसुरपुरुष सम्यक्आवृतहुएहैं ॥ अर्थात् तिसमोहरूपजालनैं तेआसुरपुरुष सर्व औरतैंवेष्टनकरन्येहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे लोकप्रसिद्ध सूत्रमयजालनैं मत्स्यादिकजंतु परवशकरीतेहैं तैसेतिसमोहरूपजालनैं तेआसुरपुरुष परवशकरन्येहै ॥ इसीकारणतैंहीं तेआसुरपुरुष आपणेअनिष्टकेसाधनरूपभी विषयभोगोंविषे प्रसक्तहुएहैं ॥ अर्थात् सर्वप्रकारकरिकै तिनविषयभोगोंविषेहीं अत्यंतआसक्तहुएहैं तिसविषयभोगोंकीआसक्तिकरिकै क्षणक्षणविषे पापोंकूंसंचयकरतेहुए तेआसुरपुरुष अशुचिनरकविषे पतनहोवैहैं ॥ अर्थात्विष्ठा श्लेष्म रुधिर इत्यादिकमलिनपदार्थोंकरिकैपूर्ण जे वैतरणीआदिकनरकहैं ॥ तिननरकोंविषेहींतेआसुरपुरुष पतनहोवैहैं इति ॥ ॥ १६ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिसआसुरपुरुषोंकेमध्यविषेभी कितनैंकी आसुरपुरुषोंकी यागादिककर्मोंविषे प्रवृत्ति देखणेमेंआवैहै ॥ यातैं तिनआसुरपुरुषोंका नरकविषेपतनकहणा अयुक्तहै ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू० श्लो०) आत्मसंभाविताःस्तब्धा धनमानमदान्विताः ॥ यजंतेनामयज्ञैस्तेदंभेनाविधिपूर्वकम् ॥ १७ ॥ आत्मसंभाविताः । स्तब्धाः। धनमानमदान्विताः । यजंते । नामयज्ञैः । ते । दंभेन । अविधिपूर्वकम् ॥ १७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन आत्मसंभावित तथास्तब्ध तथाधनमानमदकरिकैयुक्त तेआसुरपुरुष नाममात्रयज्ञोंकरिकै अविधिपूर्वक दंभकरिकै यजनकरेहैं । ॥ १७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पुनःकैसेहैंतेआसुरपुरुष आत्मसंभावितहैं ॥ अर्थात् हम सर्वगुणोंकरिकैयुक्तहोणेतैं अत्यंतश्रेष्ठहैं ॥ इसप्रकार आपणेआपकरिकैहीं पूज्यताकूंप्राप्तहुएहैं ॥ किसीश्रेष्ठपुरुषोंकरिकै पूज्यताकूंप्राप्तहुएनहीं ॥ अथवा आपणेस्त्रीपुत्रादिकोंकरिकैहीं तेआसुरपुरुष पूज्यताकूंप्राप्तहुएहैं ॥ किसीश्रेष्ठपुरुषकरिकै पूज्यताकूंप्राप्तहुएनहीं ॥ पुनःकैसेहैंते आसुरपुरुष स्तब्धहैं ॥ अर्थात् नम्रभावतैंरहितहैं तानम्रताकेअभावविषेहेतुकहेहैं (धनमानमदान्विताःइति) तहां सुवर्ण पशु अन्न गृह भूमि इत्यादिकोंकानाम धनहै ॥ सोधनहैनिमित्तजिसविषे ऐसाजो आपणेविषे पूज्यत्वरूपअतिशयताकाअध्यासहै ताकानाम मानहै ॥

सोमानहैनिमित्तजिसविषे ऐसाजो आपणेतैंभिन्न आपणेगुरुआदिकोंविषेभी अपूज्यत्वकाअभिमानहै ॥ ताकानाम मदहै ॥ ऐसे धननिमित्तकमानकरिकै तथामान निमित्तकमदकरिकै युक्तहुए तेआसुरपुरुष नामयज्ञोंकरिकै यजनकरेहैं तहां जेयज्ञ केवल नाममात्रकरिकैहीं यज्ञरूपहोवैं वास्तवतैं यज्ञरूपहोवैंनहीं तिनयज्ञोंकाना म नामयज्ञहै अथवा जेयज्ञ कर्त्तापुरुषविषे दीक्षित सोमयाजी इत्यादिकनाममात्रकेहीं संपादकहोवैंहैं ॥ किसीधर्मकेसंपादकहोतेनहीं ॥ तिनयज्ञोंकानाम नामयज्ञ है ॥ ऐसे नाममात्रयज्ञोंकूंभी तेआसुरपुरुष विधिपूर्वककरतेनहीं ॥ किंतु अविधिपूर्वकहींकरेहैं ॥ अर्थात् वेदनैं विधानकऱ्ये जे द्रव्य देवता मंत्र दक्षिणा इत्यादिक यज्ञकेअंगहैं ॥ तिनअंगोंकीसंपूर्णतापूर्वक तेआसुरपुरुष तिनयज्ञोंकूंकरतेनहीं ॥ ऐसेयज्ञोंकूंभी तेआसुरपुरुष कोईश्रद्धापूर्वक करतेनहीं ॥ किंतु दंभ करिकैकरतेहैं ॥ तहां अंतरतैंधर्मनिष्ठातैंरहितहोइकैभी बाह्यतैंलोकोंकेआगे आपणा धर्मात्मापणा प्रगटकरणा याकानाम दंभहै ॥ ऐसेदंभकरिकै तेआसुरपुरुष यज्ञोंकूंकरेहैं ॥ इसकारणतैं तेआसुरपुरुष तिनयज्ञोंकेफलोंकूंप्राप्तहोतेनहीं इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ तहां (यक्ष्येदास्यामि) इसवचनकरिकैकथनकऱ्याजो दंभअहंकारादिकहैंप्रधानजिसविषे ऐसासंकल्पहै ॥ तिससंकल्पकरिकैप्रवृत्तहुए तिनआसुरपुरुषोंके बहिरंगसाधनरूप यागदानादिककर्मभी सिद्धहोतेनहीं॥ तौ विचार वैराग्य भगवद्भक्ति इत्यादिकअंतरंगसाधन तिनआसुरपुरुषोंके कैसेसिद्धहोवैंगे ॥ किंतु ते अंतरंगसाधन तिनोंके कदाचित्भी सिद्धनहींहोवैंगे ॥ इस अर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अहंकारंबलंदर्पंकामंक्रोधंचसंश्रिताः ॥ मामात्मपरदेहेषुप्रद्विषंतोऽभ्यसूयकाः ॥१८॥ अहंकारं । बलं । दर्पं । कामं । क्रोधं । च । संश्रिताः । माम् । आत्मपरदेहेषु । प्रद्विषंतः । अभ्यसूयकाः ॥ १८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन अहंकारकूं तथाबलकूं तथादर्पकूं तथाकामकूं तथाक्रोधकूं आश्रयणकरणेहारे तथा आपणेदेहपरदेहोंविषेस्थित मैंपरमेश्वरका द्वेषकरणेहारे तथाअसूया दोषवाले तेआसुरपुरुष नरकविषेहींपडेहैं ॥ १८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अहंअभिमानरूपजोअहंकारहै ॥ सोअहंकारतौ सर्वप्राणीयोंविषेसाधारणहै ॥ यातैं सोसाधारणअहंकार ईहां अहंकारशब्दकरिकैग्रहणकर णानहीं ॥ किंतु जेगुण आपणेविषेहैंनहीं तिनगुणोंकाआपणेविषे आरोपणकरिकै तिनआरोपितगुणोंकरिकै जो आपणेमहान्पणेकाअभिमानहै ताकानाम अहं कारहै ॥ इसप्रकार शरीरविषे कार्यकरणेकासामर्थ्यरूपजोबलहै ॥ सोबलतौ सर्वप्राणीयोंविषेसाधारणहै ॥ यातैं सोसाधारणबल ईहां बलशब्दकरिकै ग्रहणकर णानहीं ॥ किंतु अन्यप्राणीयोंकेपराभवकरणेवासतै जो शरीरविषेस्थित सामर्थ्यविशेषहै ताकानाम बलहै ॥ और अन्यप्राणीयोंकीअवज्ञारूप तथागुरुराजादिक

महानूपुरुषोंकेउल्लंघनकरणेकाकारणरूप ऐसाजो चित्तकादोषविशेषहै ताकानाम दर्पहै ॥ और इष्टवस्तुविषयक जाअभिलाषाहै ताकानाम कामहै ॥ और अनिष्टवस्तुविषयक जोद्वेषहै ताकानाम क्रोधहै॥ईहां(क्रोधंच)इसवचनविषेस्थित जोचकारहै ॥तिसचकारकरिकै परगुणोंकेनहींसहनकरणेकास्वभावरूप मात्सर्यका तथाअन्यभीमहानूदोषोंका ग्रहणकरणा ॥ ऐसे अहंकार बल दर्प काम क्रोध मात्सर्य इत्यादिकमहानूदोषोंकूं तेआसुरपुरुष सर्वदा आश्रयणकरेहैं ॥ इसकारणतैं तेआसुरपुरुष नरकविषेहींपडेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारकेपतितभी तेआसुरपुरुष आपपरमेश्वरकीभक्तिकरिकै पावनहुए नरकविषेनहींपडेंगे ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिनआसुरपुरुषोंविषे भगवद्भक्तिकाअसंभव कथनकरेहैं (मामात्मपरदेहेषुप्रद्विषंतःइति) ईहां देहशब्दका आत्मशब्दके अंतविषे तथापरशब्दकेअंतविषे संबंधकरणेतैं (मांआत्मदेहेषुपरदेहेषुप्रद्विषंतः) इसप्रकारकावाक्य सिद्धहोवैहै ॥ तहां (आत्मदेहेषु) इसपदकरिकै तिनआसुरपुरुषोंकेदेहोंका ग्रहणकरणा ॥ और (परदेहेषु) इसपदकरिकै तिनआसुरपुरुषोंके पुत्रभार्यादिकोंकेदेहोंका ग्रहणकरणा ॥ यातैं (मामात्मपरदेहेषुप्रद्विषंतः) इसवचनका यहअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ तिनआसुरपुरुषोंकेप्रेमकाविषयभूत जे आपणेदेहहैं तथापुत्रभार्यादिकोंकेदेहहैं ॥ तिनसर्वदेहोंविषे तिनोंकेबुद्धिकर्मादिकोंका साक्षीरूपकरिकैविद्यमान तथानिरतिशयप्रीतिकाविषय ऐसाजोमैंपरमेश्वरहूं ॥ तिसमैंपरमेश्वरविषयकद्वेषकूंहीं तेआसुरपुरुष करेहैं ॥ तहां मैंपरमेश्वरकीआज्ञारूप जो श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रहै ॥ तिसशास्त्रउक्तअर्थकेअनुष्ठानतैंरहितपणेकरिकै जो तिसशास्त्ररूपआज्ञाकाउल्लंघनहै ॥ यहहीं मैंपरमेश्वरविषयकद्वेषहै ॥ और इसलोकविषेभी राजादिकमहानूपुरुषोंकेआज्ञाकूं जोपुरुष उल्लंघनकरेहै ॥ तिसपुरुषकूं तिनराजादिकोंकाद्वेषीकहेहैं ॥ ऐसेमैंपरमेश्वरकेद्वेषकूंकरणेहारे तिनआसुरपुरुषोंविषे मैंपरमेश्वरकीभक्तिहोणी अत्यंतदुर्घटहै इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् ऐसेआसुरपुरुषोंकूं आपणेगुरुआदिकमहानूपुरुष क्युंनहींशिक्षाकरते ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (अभ्यसूयकाः इति) हेअर्जुन वेदप्रतिपादितमार्गविषेस्थित जे गुरुआदिकवृद्धपुरुषहैं ॥ तिनगुरुआदिकोंविषेस्थित करुणादिक गुणोंविषे तेआसुरपुरुष वंचनाआदिकदोषोंकाहींआरोपणकरेहैं ॥ ऐसेअसूयादोषवाले आसुरपुरुषोंकूं तिनगुरुवोंकेवचनोंविषे श्रद्धाहींहोतीनहीं ॥ यातैं तेगुरुभी तिनआसुरपुरुषोंकूं शिक्षाकरतेनहीं ॥ इसप्रकार बहिरंगरूप तथाअंतरंगरूप सर्वसाधनोंतैंशून्यहुए ते आसुरपुरुष केवल नरकविषेहींपडेहैं इति ॥ अथवा (मामात्मपरदेहेषुप्रद्विषंतः) इसवचनका यहदूसराअर्थकरणा ॥ तहां (आत्मदेहेषु) इसपदकरिकै तिनआसुरपुरुषोंकेदेहोंका ग्रहणकरणा ॥ और (परदेहेषु) इसपदकरिकै पशुआदिकोंकेदेहोंका ग्रहणकरणा ॥ ताकरिकैयहअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ तिन आसुरपुरुषोंकेदेहोंविषे तथापशुआदिकोंकेदेहोंविषे चैतन्यअंशकरिकैस्थित जोमैंपरमेश्वरहूं तिसमैंपरमेश्वरविषयकद्वेषकूंकरतेहुए तेआसुरपुरुष यजनकरेहैं ॥ तहां दंभपूर्वककर्त्तेहुए

तिनयज्ञोंविषे तिनआसुरपुरुषोंकीश्रद्धाहै नहीं ॥ यातैं तिनश्रद्धाहीनयज्ञोंका दूसरातौंकोईफलहोवैनहीं ॥ किंतु दीक्षादिकनियमोंकरिकै तिनआसुरपुरुषोंके आत्माकूं केवल व्यर्थहीं पीडाकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इसप्रकार पशुआदिकोंकीभी आविधिपूर्वकाहिंसाकरिकै दूसराकोईफल होवैनहीं ॥ किंतु ताहिंसाकरिकै केवल चैतन्यकाद्रोहमात्रहीं सिद्धहोवैहै ॥ इसरीतिसैं आपणेदेहोंविषेस्थित तथापशुआदिकोंकेदेहोंविषेस्थित चैतन्यरूपमैंपरमेश्वरकाद्वेषकरतेहुए तेआसुरपुरुष यजनकरेहैं इति ॥ अथवा (मामात्मपरदेहेषुप्रद्विषंतः) इसवचनका यहतीसराअर्थकरणा ॥ ईहां (आत्मदेहेषु) इसपदकरिकै परमेश्वरके लीलाविग्रहरूप रामकृष्णादिकनामवाले देहोंका ग्रहणकरणा ॥ और (परदेहेषु) इसपदकरिकै प्रह्लाद विभीषण इत्यादिकनामवाले भक्तजनोंकेदेहोंका ग्रहणकरणा ॥ ताकरिकै यहअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ मैंपरमेश्वरके लीलाविग्रहरूप वासुदेवादिकनामवालेदेहोंविषे मनुष्यत्वबुद्धिरूपभ्रमकरिकै तेआसुरपुरुष मैंपरमेश्वरविषयकद्वेषकूं करेहैं ॥ तथाप्रह्लाद विभीषण इत्यादिकनामोंवाले भक्तजनोंकेदेहोंविषे सर्वदा आविर्भावकूंप्राप्तहुआ जोमैंपरमेश्वरहूं ॥ तिसमैंपरमेश्वरविषयकद्वेषकूं तेआसुरपुरुष करेहैं ॥ यहवार्त्ता पूर्वनवमेअध्यायविषे (अवजानंतिमांमूढामानुषींतनुमाश्रितम् ॥ परंभावमजानंतोममभूतमहेश्वरम् ॥ मोघाशामोघकर्माणोमोघज्ञानाविचेतसः ॥ राक्षसीमासुरींचैवप्रकृतिंमोहिनींश्रिताः) इनदोश्लोकोंकरिकै कथनकरीथी॥ तथा (अव्यक्तंव्यक्तिमापन्नंमन्यंतेमामबुद्धयः) इसवचनकरिकैभीपूर्वकथनकरीथी इति ॥ यातैं यह अर्थसिद्धभया ॥ ॥ जिसमैंपरमेश्वरकीभक्तिकरिकै अधिकारीजन पावनहोवैहैं ॥ तिसमैंपरमेश्वरविषेहीं तिनआसुरपुरुषोंकाद्वेषहै ॥ ऐसेद्वेषीपुरुषोंविषे मैंपरमेश्वरकीभक्तिहोणी अत्यंतदुर्घटहै ॥ यातैं तेआसुरपुरुष किसीप्रकारकरिकैभी पावनहोतेनहीं इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् आपपरमेश्वरकी कृपाकरिकै तिनआसुरपुरुषोंकाभी कदाचित् निस्तारहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ तिनआसुरपुरुषोंका कदाचित्भी निस्तारहोणेहारानहींहैं ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) तानहंद्विषतःक्रूरान्संसारेषुनराधमान् ॥ क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेवयोनिषु ॥ १९ ॥ तान् । अहं । द्विषतः । क्रूरान् । संसारेषु । नराधमान् । क्षिपामि । अजस्रम् । अशुभान् । आसुरीषु । एव । योनिषु ॥१९॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन द्वेषकरणेहारे तथाक्रूर तथानरोंविषेअधम तथा निरंतर अशुभकर्मोंकूंकरणेहारे ऐसेतिनआसुरपुरुषोंकूं मैंपरमेश्वर नरकंजाणेकेमार्गों विषेहीं गेडताहूं तिसतैंअनंतर अत्यंतक्रूर व्याघ्रसर्पादिकयोनियोंविषेहीं गेडताहूं ॥ १९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन शास्त्रप्रतिपादितसन्मार्गकेविरोधी जे आसुरपुरुषहैं ॥ कैसेहैं तेआसुरपुरुष ॥ मैंपरमेश्वरका तथासाधुजनोंका सर्वदा द्वेषकरणेहारेहैं ॥ पुनः

कैसेहैंतेआसुरपुरुष क्रूरहैं ॥ अर्थात् सर्वदा जीवोंकीहिंसाविषेहींप्रीतिवालेहैं ॥ इसीकारणतैंहीं तेआसुरपुरुष सर्वनरोंविषेअधमहैं ॥ अर्थात् अत्यंतनिंदितहैं ॥ पुनः कैसेहैंतेआसुरपुरुष अशुभहैं॥अर्थात् निरंतर शास्त्रनिषिद्धअशुभकर्मोंकूहींकरणेहारेहैं ॥ ऐसेतिन आसुरपुरुषोंकूं कर्मकेफलकाप्रदाता मैंपरमेश्वर नरकजाणेकेमार्गोंविषेहींगेडताहूं ॥ और तेआसुरपुरुष आपणेपापकर्मोंकेवशतैं तिननरकोंविषे बहुतकालपर्यंत अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंअनुभवकारिकै जबी तिसनरकतैंआवैहैं ॥ तबी मैंपरमेश्वर तिनआसुरपुरुषोंकूंपूर्वलेकर्मवासनावोंकेअनुसार व्याघ्रसर्पादिक अत्यंतक्रूरयोनियोंविषेहीं गेडाताहूं ॥ ऐसेमैंपरमेश्वरकेद्रोही तथासाधुपुरुषोंकेद्रोही आसुरपुरुषोंऊपरि मैंपरमेश्वरकी कदाचित्भी कृपाहोतीनहीं ॥ तहां इसप्रकारकेपापात्माआसुरपुरुषनीचयोनियोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (अथकपूयचरणाअभ्यासोहयत्तेकपूयांयोनिमापद्येरन् श्वयोनिंवा शूकरयोनिंवा चांडालयोनिंवाइति ॥) अर्थयह ॥ शास्त्रनिषिद्ध पापकर्मोंकूंकरणेहारेपुरुषशीघ्रहीं नीचयोनियोंकूंप्राप्तहोवैहैं॥ कबीश्वानयोनिकूंप्राप्तहोवैहैं॥ कबी शूकरयोनिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ कबी चांडालयोनिकूंप्राप्तहोवैहैं॥ इसतैं आदिलैके दूसरीभीअनेकनीचयोनियोंकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ इसप्रकार जीवोंकेपूर्वपूर्वकर्मोंकेअनुसार फलकीप्राप्तिकरणेहारेईश्वरविषे विषमतादोषकी तथानिर्दयतादोषकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ता ब्रह्मसूत्रोंविषे श्रीव्यासभगवान्नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्रम् ॥ (वैषम्यनैर्घृण्येनसापेक्षत्वात्तथाहिदर्शयति ॥) अर्थयह॥ इसलोकविषे कोईप्राणीसुखीहै कोइप्राणी दुःखीहै कोईप्राणी धनीहै कोईप्राणी दरिद्रीहै कोईप्राणी पंडितहै कोईप्राणी मूर्खहै ॥ इसप्रकारकेविषमजगत्कीउत्पत्तिकरणेहारे ईश्वरविषे विषमतादोषकी तथा निर्दयतादोषकी अवश्यकारिकै प्राप्तिहोवैगी ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए श्रीव्यासभगवान् कहेहैं ॥ परमेश्वर जीवोंकेपुण्यपापकर्मकी अपेक्षाकारिकै इसविषमजगत्कूं उत्पन्नकरेहै ॥ तिसपुण्यपापकर्मकेअनुसारहीं कोईप्राणी सुखीहोवैहै कोईप्राणी दुःखीहोवैहै ॥ यातैं परमेश्वरविषे विषमतादोषकी तथानिर्दयतादोषकी प्राप्तिहोवैनहीं इसीप्रकारकेअर्थकूं । (अथकपूयचरणाः ।) इत्यादिकश्रुतियां कथनकरेहैं इति ॥ ऐसा सर्वजगत्काकारणरूप सोअंतर्यामीपरमेश्वर तिनआसुरपुरुषोंकूं केवल पापकर्महीं करावैहै ॥ पुण्यकर्मकरावतानहीं ॥ काहेतैं तिनआसुरपुरुषोंविषे केवल पापकर्मोंकाहींबीजविद्यमानहै ॥ पुण्यकर्मोंकाबीज तिनोंविषेहैनहीं ॥ और बीजकेअनुसारहीं अंकुरकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ अन्यबीजतैं अन्यअंकुरकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ जैसे निंबकेबीजतैं निंबके अंकुरकीहीं उत्पत्तिहोवैहैं ॥ तिसनिंबकेबीजतैं आम्रकेअंकुरकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यद्यपि सोपरमेश्वर परमकृपालुहै ॥ तथापि सोपरमेश्वर तिनआसुरपुरुषोंकेपापोंकूंनाशकरतानहीं ॥ काहेतैं तिनपापोंकेनाशकरणेहारे जेपुण्यकर्महैं ॥ तेपुण्यकर्म तिनआसुरपुरुषोंविषेहैंनहीं ॥ यातैं सोपरमेश्वर तिनआसुरपुरुषोंकेपापोंकूंनाशकरतानहीं ॥ और तिनआसुरपुरुषोंविषे पुण्यकर्मोंकेकरणेकीयोग्यताहैनहीं ॥ यातैं सोपरमेश्वर तिनआसुरपुरुषोंकूं पुण्यकर्मभी करावतानहीं ॥ जिनपुण्यकर्मोंक

रिकै तिनोंकेपापोंकानाशहोवैहै ॥ काहेतैं कार्यकीउत्पत्तिकरणेविषेसमर्थहुआभी सोपरमेश्वरविषे जिसवस्तुविषे जिसकार्यकेउत्पत्तिकीयोग्यताहोवैहै तिसवस्तुतैंहीं तिसकार्यकीउत्पत्तिकरेहै ॥ अयोग्यवस्तुतैं तिसकार्यकीउत्पत्तिकरतानहीं ॥ जैसे पाषाणोंविषे यवअंकुरकेउत्पत्तिकीयोग्यताहैनहीं यातैं परमेश्वर तिनपाषाणोंविषे यवअंकुरकीउत्पत्तिकरतानहीं ॥ किंतुयवबीजोंविषेहीं तिसयवअंकुरकीउत्पत्तिकरेहै ॥ तैसे पुण्यकर्मकीउत्पत्तिकेअयोग्य तिनआसुरपुरुषोंविषे सोईश्वरभी पुण्यकर्मोंकूंउत्पन्नकरतानहीं और जोकोईवादी यहवचनकहै ॥ कार्यके करणेकूं तथानकरणेकूं तथाअन्यथाकरणेकूं जोसमर्थहोवै ताकानाम ईश्वर है ॥ ऐसाईश्वरहोणेतैं सोपरमेश्वर पुण्यकर्मोंकेअयोग्यभी तिनआसुरपुरुषोंविषे पुण्यकर्मकीयोग्यताकेसंपादनकरणेमेंसमर्थहींहै इति ॥ सोयहकहणा यद्यपि सत्यहै ॥ काहेतैं सोपरमेश्वर सत्यसंकल्पहै ॥ यातैं सोपरमेश्वर जोकदाचित् इनआसुरपुरुषोंविषेपुण्यकर्मकीयोग्यताहोवै इसप्रकारकासंकल्पकरे ॥ तौं तिनआसुरपुरुषोंविषे पुण्यकर्मकीयोग्यताहोइजावै ॥ परंतु सोपरमेश्वर इसप्रकारकासंकल्पहीं करतानहीं ॥ काहेतैं परमेश्वरकीआज्ञारूप जोश्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रहै ॥ तिसशास्त्रकाउल्लंघनकरणेहारे ॥ तथापरमेश्वरकेभक्तोंकेद्रोहीं ऐसेजे तेदुरात्माआसुरपुरुषहैं ॥ तिनआसुरपुरुषोंऊपरि तिसपरमेश्वरकीप्रसन्नता हैनहीं ॥ ताप्रसन्नतातैंविना सोपरमेश्वर तिससंकल्पकूंकैसेकरैगा किंतु कदाचित्भी नहींकरैगा यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकनथकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (एषह्येवसाधुकर्मकारयतितंयमुन्निनीषते एषएवसाधुकर्मकारयतितंयमधोनिनीषते ॥) अर्थयह ॥ यहपरमेश्वर प्रसन्नहोइकै जिसपुरुषकूं ऊपरिलेस्वर्गादिकलोकोंविषे लेजाणेकीइच्छाकरेहै ॥ तिसपुरुषकूंतौं पुण्यकर्मकरावैहै ॥ और यहपरमेश्वर अप्रसन्नहोइकै जिसपुरुषकूं नरकादिकअधोलोकोंविषे लेजाणेकीइच्छाकरेहै ॥ तिसपुरुषकूंतौं पापकर्महीं करावैहै इति ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ परमेश्वरकीप्रसन्नताकाकारणरूप जो परमेश्वरकीवेदरूपआज्ञाकापालनहै ॥ सोआज्ञाकापालन जिनपुरुषोंविषे विद्यमानहै ॥ तिनपुरुषों ऊपरितौ परमेश्वरकी प्रसन्नताहोवैहैं ॥ और जिनपुरुषों विषे सोपरमेश्वरकीआज्ञाकापालन नहींहै ॥ तिनपुरुषोंऊपरि परमेश्वरकी प्रसन्नताहोतीनहीं ॥ और कारणके विद्यमानहुएहीं कार्यकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ कारणकेअभावहुए कार्यकी उत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ता लोकविषेभी प्रसिद्धहींहै ॥ इसविषे परमेश्वरकूं विषमता तथानिर्दयता कैसेप्राप्तहोवैंगी किंतु नहींप्राप्तहोवैंगी इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ऐसे आसुरपुरुषोंकाभी क्रमकरिकै बहुतजन्मोंकेअंतविषे श्रेयहोवैगा ॥ ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए ॥ ऐसे आसुर पुरुषोंका कदाचित्भी श्रेयहोणेहारानहींहै ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) आसुरींयोनिमापन्नामूढाजन्मनिजन्मनि ॥ मामप्राप्यैवकौंतेयततोयांत्यधमांगतिम् ॥ २० ॥ आसुरीं । योनिम् ।

आपन्नाः । मूढाः । जन्मनि । जन्मनि । मां । अप्राप्य । एव । कौंतेय । ततः । यांति । अधमां । गतिम् ॥२०॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेकौंतेय जेपुरुष कदाचित्भी आसुरीयोनिकूं प्राप्तहुएहैं तेपुरुष जन्म जन्मविषे अविवेकीहुए वेदमार्गकूं नप्राप्तहोइके हीं तिसतैंभी अधम गतिकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ २० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जेपुरुष कदाचित्भी आसुरियोनिकूंप्राप्तहुएहैं ॥ तेपुरुष जन्मजन्मविषे मूढहुए अर्थात् तमोगुणकी बाहुल्यताकरिकै विवेकतैं शून्यहुए ॥ मेरेकूंप्राप्तहोईके अर्थात् मैंपरमेश्वरउपदिष्टवेदमार्गकूं नप्राप्तहोइकै तिसतैंभीअत्यंतनिकृष्टगतिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ईहां (मामप्राप्यैव) इसवचनकेअंतविषेस्थितजो एव यहशब्दहै ॥ सोएवशब्द तिर्यक्स्थावरादिकयोनियोंविषे वेदमार्गकेप्राप्तिकीअयोग्यताकूंबोधनकरैहै॥ अर्थात् तिनातिर्यक्स्थावरादिकयोनियोंविषे वेदमार्गके प्राप्तिकी योग्यताहींनहींहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ अत्यंततमोगुणकीबाहुल्यताकरिकै तेआसुरपुरुष वेदमार्गकीप्राप्तिकेअयोग्यहोइके पूर्वपूर्वनिकृष्टयोनियोतैं उत्तरउत्तर अत्यंतनिकृष्ट अधमयोनियोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ जैसे व्याघ्रयोनितैं सर्पयोनि निकृष्टहै ॥ तिससर्पयोनितैंभी कीटपतंगादिकयोनि निकृष्टहै ॥ तिसकीटपतंगादिकयोनितैंभी वृक्षादिकयोनि निकृष्टहै इति ॥ ईहांयद्यपि (मामप्राप्य) इसवचनविषेस्थित मां इसपदकरिकै परमेश्वररूपअर्थकीहींप्रतीतिहोवैहै ॥ तथापि मां इसपदकरिकै परमेश्वरकाग्रहणकरणानहीं ॥ किं तुमां इसपदकरिकै परमेश्वरउपदिष्टवेदमार्गकाहीं ग्रहणकरणा ॥ काहेतैं जिसवस्तुविषे जोअर्थ किसीभीप्रकारकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ तिसवस्तुविषेहीं तिसअर्थकानिषेधहोवैहै ॥ सर्वप्रकारतैंअप्राप्तअर्थका निषेधहोतानहीं ॥ और तिनआसुरपुरुषोंविषे परमेश्वरकेप्राप्तिकीकोईशंकामात्रभीहोतीनहीं ॥ जिसपरमेश्वरकीप्राप्तिका (अप्राप्य) इसशब्दकरिकै निषेधहोवै ॥ यद्यपि तिनआसुरपुरुषोंविषे वेदमार्गकी भीप्राप्ति संभवतीनहीं ॥ तथापि तिनआसुरपुरुषोंविषे वेदमार्गकेप्राप्तिकीशंकामात्र कदाचित् होइसकेहै ॥ तिसवेदमार्गकेप्राप्तिकाहीं (अप्राप्य) यहशब्द निषेधकरैहै ॥ यातैं मां इसपदकीलक्षणवृत्तितैं परमेश्वरउपदिष्टदेवमार्गकाग्रहणकरणा उचितहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतो मां इसपदकीलक्षणावृत्तिकरिकै परमेश्वरकेप्राप्तिकासाधनरूप अविकारीमनुष्यदेहका ग्रहणकर्‍याहै इति ॥ यातैं इसश्लोकका यहसमुदायअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ जिसकारणतैं एकवारभी आसुरीयोनिकूंप्राप्तहुएपुरुषोंकूं तिसतैंउत्तरउत्तर निकृष्टतर तथानिकृष्टतम योनियोंकीहींप्राप्तिहोवैहै ॥ और अत्यंततमोगुणकीबाहुल्यताकरिकै तिनआसुरपुरुषोंकूं तिननिकृष्टयोनियोंकेनिवृत्तकरणेका सामर्थ्यहोवैनहीं ॥ तिसकारणतैं जितनैंकालपर्यंत अधिकारीमनुष्यदेहकीप्राप्तिहै ॥ तितनेंकालपर्यंत महान्प्रयत्नकरिकै परमनिकृष्टआसुरीसंपदावोंकेनिवृत्तकरणेवास्तैं शीघ्रहीं इनश्रेयकीइच्छावान्पुरुषोंनैं यथाशक्तिपरिमाण दैवीसंपदावोंका संपादनकरणा ॥ जोकदाचित् तिनआसु

रीसंपदावोंकेनिवृत्तकरणेवासतै यहपुरुष दैवीसंपदावोंका संपादननहींकरैंगा ॥ तौं तिनआसुरीसंपदावोंकेवशतैं व्याघ्रसर्पादिकनीचदेहोंकेप्राप्तहुएतैंअनंतर श्रेयसाधनोंकेअनुष्ठानकरणेविषेअयोग्यहोणेतैं इसपुरुषका कदाचित्‌भीनिस्तारनहींहोवैंगा ॥ इसप्रकार सोपुरुष महान्‌संकटोंकूंप्राप्तहोवैंगा ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकथनकरीहै ॥ तहां श्लोक ॥ (इहैवनरकव्याधेश्चिकित्सांनकरोतियः ॥ गत्वानिरौषधंस्थानंसरुजःकिंकरिष्यति) ॥ अर्थयह ॥ आसुरीसंपत्‌ रूपनिमित्तकरिकै उत्पन्नहोणेहारी जानरकरूपव्याधिहै ॥ तिसनरकरूपव्याधिकीनिवृत्तिकरणेहारी दैवीसंपदरूपचिकित्साकूं जोपुरुष इस अधिकारीमनुष्यशरीर विषे नहींकरेहै ॥ सोरोगीपुरुष दैवीसंपदरूपऔषधतैं रहितस्थानविषे जाइकै तिननरकरूपव्याधिकेनिवृत्तकरणेवासतै क्याउपायकरैंगा ॥ किंतु तहांकोईभीउपाय नहींकरैंगाइति ॥ २० ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन्‌ (दंभोदर्पोऽतिमानश्च) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्वआपनैं कथनकरीजा आसुरसंपत्‌है ॥ साआसुरसंपत्‌ अनेकप्रकारकीहै ॥ यातैं सासर्वआसुरसंपत्‌ इसपुरुषनैं आपणेआयुष्‌कीसमाप्तिपर्यंत प्रयत्नकरिकैभी निवृत्तकरणेकूंअशक्यहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान्‌ तिसआसुरीसंपत्‌कूं संक्षेपकरिकैकथनकरेहै ॥

(मू॰ श्लो॰) त्रिविधंनरकस्येदंद्वारंनाशनमात्मनः ॥ कामःक्रोधस्तथालोभस्तस्मादेतत्त्रयंत्यजेत्‌ ॥ २१ ॥ त्रिविधं । नरकस्य । इदं । द्वारं । नाशनम्‌ । आत्मनः । कामः । क्रोधः । तथा । लोभः । तस्मात्‌ । एतत्‌ । त्रयं । त्यजेत्‌ ॥२१॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन इसपुरुषकूं अधमयोनियोंकीप्राप्तिकरणेहारा यह तीनप्रकारका नरकका द्वारहै काम क्रोध तथा लोभ तिसकारणतैं इन तीनोंकूं परित्यागकरै ॥ २१ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन नरककेप्राप्तिका यहतीनप्रकारकाहीं द्वार कहीये साधनहै ॥ सोयहतीनप्रकारकाद्वारहीं पूर्वउक्त सर्वआसुरसंपत्‌कामूलभूतहै ॥ तथा आत्मा केनाशकरणेहाराहै ॥ अर्थात्‌ धर्ममोक्षादिकसर्वपुरुषार्थोंकीअयोग्यताकूंसंपादनकरिकै इनपुरुषोंकूं अत्यंतअधमयोनियोंकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तहां सोतीनप्रका रका नरककाद्वार कौनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान्‌कहेहै (कामःक्रोधस्तथालोभःइति) हेअर्जुन काम क्रोध लोभ यहतीनोंहीं इसपुरुष कूं नरककीप्राप्ति करणेहारेहैं ॥ तथा व्याघ्र सर्प कीट पतंग वृक्ष इत्यादिक अत्यंतअधमयोनियोंकीप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ और इनतीनोंकेप्राप्तहुएतैंअनंतरहीं इसपुरुषकूं तेसर्वआसुरसंपत्‌ प्राप्तहोवैहै ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं काम क्रोध लोभ यहतीनोंहीं इसपुरुषकूं सर्वअनर्थोंकेमूलभूतहैं ॥ तिसकारणतैं यहअधिकारी पुरुष इनतीनोंका अवश्यकरिकैपरित्यागकरै ॥ इनतीनोंकेपरित्यागकरिकैहीं पूर्वउक्तसर्वहींआसुरसंपत्‌ परित्यागकरीजावैहै ॥ तहां चित्तविषेउत्पन्नहुए कामक्रोध